CORDOVA® App 24X7
For Teachers Only

FREE SMART CLASS SOFTWARE
WITH WEB SUPPORT
FOR TEACHERS ONLY

नव भारती

हिंदी पाठमाला

7

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

	पाठ का नाम	विधा	कवि/लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	जागरण गीत	कविता	सोहनलाल द्विवेदी	9
2.	जल बैंक	शिक्षाप्रद कहानी	अशोक गुजराती	13
3.	सच का सौदा	प्रेरक कहानी	सुदर्शन	19
	केवल पढ़ने के लिए (आइए, पत्रिका निकालें)			26
4.	पृथ्वीराज चौहान	ऐतिहासिक नाटक	–	27
5.	मनुज को खोज निकालो	कविता	सुमित्रानंदन पंत	37
6.	अपूर्व अनुभव	जापानी संस्मरण	तेत्सुको कुरियानागी	41
7.	प्राकृतिक व्यायाम	लेख	महात्मा गाँधी	47
	केवल पढ़ने के लिए (भारत की प्राचीन धरोहरः योग)			53
8.	अनोखा हॉर्न	हास्य कथा	इरा सक्सैना	55
9.	डिजिटल इंडिया	कविता	–	61

Scanned with CamScanner

भाषा की योग्यता और कौशल

पाठ संख्या	सुनना, बोलना और पढ़ना	लिखना	गतिविधियाँ	मूल्य
1.	कविता का लयबद्ध गान, भाव, आशय, चिंतन, संदेश, प्रश्नोत्तर, शब्दार्थ, कठिन शब्दों का वाचन तथा कवि परिचय।	पद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, पर्यायवाची शब्दों में ✓ निशान लगाना, विलोम शब्दों का मिलान करना तथा सही समरूपी भिन्नार्थक शब्द का प्रयोग करना।	श्रवण-वाचन, कविताओं का संग्रह करना, लयबद्ध गान करना, विषयानुसार चर्चा करना, दोहे से मिला संदेश बताना तथा अनुच्छेद-लेखन	कर्मनिष्ठ बनना, संघर्षरत रहना तथा प्रगति की राह अपनाना।
2.	पठन-पाठन, चिंतनात्मक पठन, कार्य-कारण संबंध, संदेश, प्रतिक्रिया, प्रश्नोत्तर, शब्दार्थ तथा कठिन शब्दों का वाचन।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके लिखना, संज्ञा के भेद में ✓ निशान लगाना, भाववाचक संज्ञा बनाकर खाली जगह भरना तथा मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग करना।	ये भी जानें, अपने विचार मेल करना, सूक्तियाँ बनाना, शोध, प्रश्न का हल तथा उदाहरणानुसार लिखना।	जल ही जीवन है। इसे बेकार में न बहाएँ।
3.	पठन-पाठन, चिंतनात्मक पठन, कार्य-कारण संबंध, संदेश, प्रतिक्रिया, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नों के उत्तर देना तथा लेखक परिचय।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, बहुवचन रूप लिखना, स्त्रीलिंग रूप लिखना, समुच्चयबोधक से खाली जगह भरना तथा मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य-प्रयोग करना।	विशेषताएँ बताते हुए पत्र-पत्रिकाओं के नाम बताना, शोध, पत्र-लेखन तथा हँसने की बारी।	सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता तथा आत्मसम्मान।
4.	नाटक को प्रभावशाली ढंग से पढ़ने का अभ्यास, जानकारी, शब्दार्थ, शब्दों का सही उच्चारण, मंचन तथा प्रश्नों के उत्तर देना।	किसने, किससे कहा?, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, सर्वनाम शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ? लिखना, सर्वनाम के भेद में ✓ निशान लगाना, तद्भव रूप लिखना तथा मुहावरों का प्रयोग करना।	ये भी जानें, नाटक-मंचन, विषयानुसार चर्चा करना, उर्दू शब्दों की सूची बनाना, शोध तथा खेल-खेल में।	साहस, वीरता, क्षमादान तथा आत्मसम्मान।
5.	कविता का लयबद्ध गान, अर्थ-बोध, भाव-बोध, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नों के उत्तर देना तथा कवि परिचय।	पद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, विलोम शब्दों से खाली जगह भरना, वर्ण-विच्छेद, 'र' के रूप का प्रयोग करना तथा अनेकार्थक शब्दों का भिन्न अर्थ से मिलान करना।	श्रवण-वाचन, विषयानुसार चर्चा, चार्ट पेपर पर बिंदुओं के रूप में विचार प्रकट करना, लघुकथा लिखना तथा माथापच्ची।	रूढ़िवादी विचारधारा का अंत तथा एकता व भाईचारे की भावना।
6.	पठन-पाठन, उद्देश्य-कथन, चरित्र-चित्रण, कार्य-कारण संबंध, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण तथा प्रश्नों के उत्तर देना।	किसने, किससे कहा?, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, विराम-चिह्न का प्रयोग करना, गलत की जगह सही विराम-चिह्न लगाकर लिखना तथा संख्यावाची शब्दों से शब्द बनाना।	अनुभव के बारे में लिखना, विषयानुसार जगहों की सूची बनाना, शोध तथा प्रतिवेदन-लेखन।	पोलियो उन्मूलन, मैत्रीपूर्ण व्यवहार, शिष्टता, साहस तथा आत्मविश्वास।
7.	पठन-पाठन, चिंतन, व्यायाम का महत्त्व, विस्तृत विवरण, संदेश, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण, प्रश्नों के उत्तर देना तथा लेखक परिचय।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, विशेषण-विशेष्य छाँटना, विशेषण-विशेष्य का मिलान करना, विशेषण के भेद में ✓ निशान लगाना तथा युग्म-शब्दों से खाली जगह भरना।	संवाद बढ़ाना, शोध तथा अपठित गद्यांश पर प्रश्न बनाना।	व्यायाम का महत्त्व, कृषक जीवन सर्वोपरि, मानसिक व शारीरिक विकास।
8.	हास्यास्पद कहानी का पठन, चित्रण, सही-गलत की पहचान, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण तथा प्रश्नों के उत्तर देना।	गद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, उद्देश्य-विधेय छाँटना, उद्देश्य विस्तार लिखना तथा संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण की पहचान करना।	शोध, स्क्रैप-बुक में चित्र चिपकाकर जानकारी प्राप्त करना, ट्रैफ़िक चिह्नों के बारे में बताना तथा डायरी-लेखन।	खुश रहना, छोटी-छोटी खुशियों को मनाना, दूसरों के काम आना।
9.	कविता का लयबद्ध गान, अर्थ-बोध, भाव-बोध, शब्दार्थ, शुद्ध उच्चारण तथा प्रश्नोत्तर।	पद्यांश पर आधारित, अति लघु, लघु, दीर्घ तथा पाठ से आगे के प्रश्नों के उत्तर देना, समान अर्थ प्रतीत होने वाले शब्द में ✓ निशान लगाना, उपसर्ग और मूल शब्द अलग करना, प्रत्यय जोड़कर लिखना तथा पर्याय छाँटकर लिखना।	विषयानुसार चार्ट पेपर पर बिंदुओं को अंकित करना, विषयानुसार चर्चा करना, शोध तथा खेल-खेल में।	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विशेषकर इंटरनेट को बढ़ावा देना, देश के विकास में सहयोग।

Scanned with CamScanner

स्वच्छता अभियान

एक कदम स्वच्छता की ओर

शिक्षक के लिए– दिए गए चित्रों से संबंधित कक्षा में चर्चा कीजिए; जैसे– हमें विद्यालय, घर तथा आस-पास के परिवेश की सफ़ाई का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए।

Scanned with CamScanner

1 जागरण गीत

(कविता)

कवि का मानना है कि कल्पना-लोक में विचरण करने वालों को ठोस धरती की वास्तविकताओं को जानना चाहिए। उन्हें श्रम में सुख का अनुभव करना चाहिए। अतः प्रस्तुत कविता में कवि असावधान और बेख़बर पड़े लोगों को सोने के बदले जागने और पतन के रास्ते चलने के बदले प्रगति पथ पर आगे बढ़ने का संदेश दे रहे हैं।
*कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे इस कविता का रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से लयबद्ध गान करेंगे।*

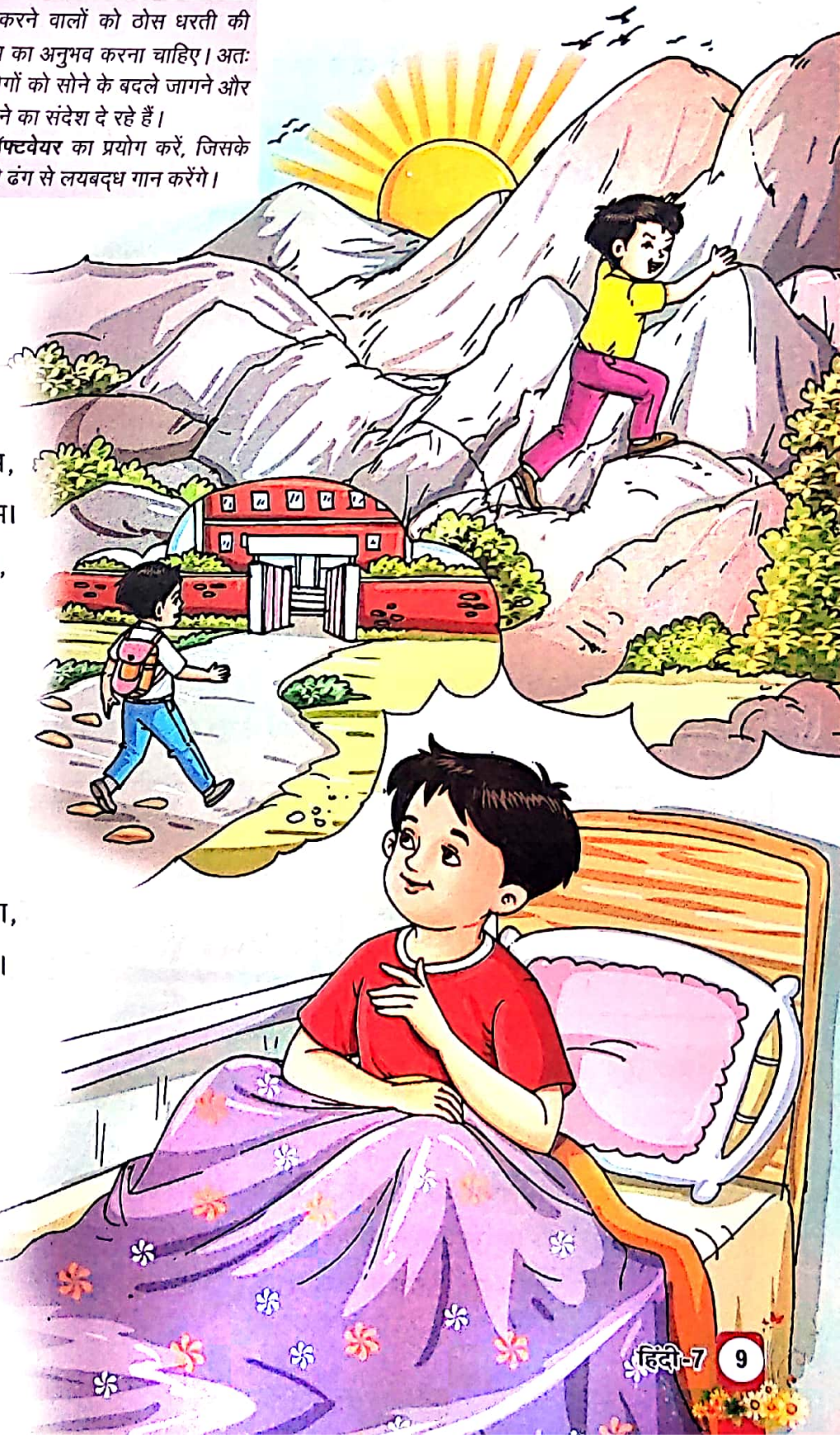

अब न गहरी नींद में तुम सो सकोगे,
गीत गाकर मैं जगाने आ रहा हूँ।
अतल अस्ताचल तुम्हें जाने न दूँगा,
अरुण उदयाचल सजाने आ रहा हूँ।

कल्पना में आज तक उड़ते रहे तुम,
साधना से **सिहरकर** मुड़ते रहे तुम।
अब तुम्हें आकाश में उड़ने न दूँगा,
आज धरती पर बसाने आ रहा हूँ।

सुख नहीं यह, नींद में सपने सँजोना,
दुख नहीं यह, **शीश** पर गुरु भार ढोना।
शूल तुम जिसको समझते थे अभी तक,
फूल मैं उसको बनाने आ रहा हूँ।

देखकर **मँझधार** को घबरा न जाना,
हाथ ले **पतवार** को घबरा न जाना।
मैं किनारे पर तुम्हें थकने न दूँगा,
पार मैं तुमको लगाने आ रहा हूँ।

तोड़ दो मन में कसी सब **शृंखलाएँ**,
तोड़ दो मन में बसी **संकीर्णताएँ**।
बिंदु बनकर मैं तुम्हें ढलने न दूँगा,
सिंधु बन तुमको उठाने आ रहा हूँ।

Scanned with CamScanner

तुम उठो, धरती उठे, **नभ शिर** उठाए,
तुम चलो गति में नई गति झनझनाए।
विपथ होकर मैं तुम्हें मुड़ने न दूँगा,
प्रगति के पथ पर बढ़ाने आ रहा हूँ।

–सोहनलाल द्विवेदी

मूल्य: कर्मनिष्ठ बनना, संघर्षरत रहना तथा प्रगति की राह अपनाना।

कवि परिचय : हिंदी के प्रसिद्ध कवि सोहनलाल द्विवेदी का जन्म 22 फरवरी, 1906 को उत्तर प्रदेश के फ़तेहपुर ज़िले में हुआ। इनकी रचनाएँ ओजपूर्ण एवं भावपूर्ण की परिचायक हैं। इनके जीवनकाल में इन्हें 'राष्ट्रकवि' की उपाधि से अलंकृत किया गया तथा वर्ष 1969 में पद्मश्री से सम्मानित किया गया। 1 मार्च, 1988 को इस राष्ट्रकवि ने अपना शरीर त्याग दिया।

इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं– भैरवी, प्रभाती, युगाधार, कुणाल, चेतना।

शब्द-अर्थ

अतल	–	बहुत गहरा	**अरुण**	–	लाल रंग का	**शूल**	–	काँटा
मँझधार	–	नदी के बीच की धारा	**संकीर्णता**	–	छोटापन, तुच्छता	**विपथ**	–	गलत रास्ता
शृंखला	–	बंधन, ज़ंजीर, कड़ियाँ	**सिहरना**	–	काँपना	**प्रगति**	–	तरक्की, उन्नति
साधना	–	अभ्यास करना	**नभ**	–	आकाश	**शीश**	–	सिर
शिर	–	मस्तक, सिर, ऊपरी भाग	**पतवार**	–	नाव में पीछे की ओर लगी तिकोनी लकड़ी			
अस्ताचल	–	पश्चिम दिशा का कल्पित पर्वत, जिसके पीछे सूर्य का अस्त होना माना गया है				**सिंधु**	–	समुद्र, सागर
उदयाचल	–	पूर्व दिशा का कल्पित पर्वत, जिसके पीछे से सूर्य का उदित होना माना गया है						

☞ **वाचन/श्रुतलेख–** अस्ताचल, उदयाचल, कल्पना, मँझधार, शृंखलाएँ, संकीर्णताएँ, विपथ, प्रगति।

अभ्यास

कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ से

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) अस्ताचल और उदयाचल से आप क्या समझते हैं?

(ख) कविता के अनुसार कवि मनुष्य को क्या-क्या नहीं करने देंगे?

(ग) मन में बसी संकीर्णताएँ किस प्रकार प्रगति की राह में बाधक हैं?

Scanned with CamScanner

लिखित

1. संकेत पद्यांश को कविता में ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

संकेत– सुख नहीं यह, ... बनाने आ रहा हूँ। (पृष्ठ-9)

(क) क्या सुख नहीं है?

(ख) कवि ने दुख किसे नहीं माना है?

(ग) कवि किसे फूल बनाने की बात कह रहे हैं?

2. अति लघु उत्तर लिखिए–

(क) कवि किसे जगाने आ रहे हैं?

(ख) 'आकाश में उड़ने न दूँगा' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ग) कविता के अनुसार मनुष्य को कब घबराना नहीं चाहिए?

3. लघु उत्तर लिखिए–

(क) गहरी नींद में बेख़बर सोए लोगों को कवि किस प्रकार जगाना चाहते हैं?

(ख) 'तोड़ दो मन में कसी सब शृंखलाएँ' पंक्ति से कवि का क्या आशय है?

(ग) इस कविता से आपको क्या सीख मिलती है?

4. दीर्घ उत्तर लिखिए–

(क) 'जागरण गीत' कविता का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) निम्नलिखित संकेत पंक्तियों का सप्रसंग भावार्थ लिखिए–

संकेत– तुम उठो, ... आ रहा हूँ। (पृष्ठ-10)

पाठ से आगे

आपकी सोच-समझ

(क) सफलता प्राप्त करने के लिए आप क्या-क्या करेंगे?

(ख) इस कविता को कवि ने किस उद्देश्य से लिखा होगा?

भाषा ज्ञान — पर्यायवाची शब्द, विलोम शब्द, समरूपी भिन्नार्थक शब्द

1. समान अर्थ वाले शब्दों को **पर्यायवाची शब्द** कहते हैं; जैसे– पेड़- तरु, वृक्ष।

दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्दों में ✓ का निशान लगाइए–

आकाश	–	नभ	☐	पाताल	☐	व्योम	☐
फूल	–	पुष्प	☐	शूल	☐	कुसुम	☐
धरती	–	धरा	☐	पृथ्वी	☐	संसार	☐
सिंधु	–	रिक्त	☐	सागर	☐	समुद्र	☐
पथ	–	राह	☐	मार्ग	☐	प्रजा	☐

Scanned with CamScanner

2. विपरीत अर्थ बताने वाले शब्दों को **विलोम शब्द** कहते हैं; जैसे– अनुज-अग्रज, आय-व्यय।

दिए गए विलोम शब्दों का मिलान कीजिए–

अस्ताचल	वास्तविक
काल्पनिक	पुण्य
शूल	शिष्य
आकाश	उदयाचल
गुरु	सुख
दुख	पाताल

3. कुछ शब्द सुनने में एक समान, लिखने में थोड़े भिन्न परंतु अर्थ में पूरी तरह से भिन्न होते हैं, इन्हें **समरूपी भिन्नार्थक शब्द** कहते हैं; जैसे– बात-बातचीत, वात-हवा।

दिए गए वाक्यों में रंगीन शब्दों के स्थान पर सही शब्द का प्रयोग करके वाक्यों को लिखिए–

(क) मैं तुम्हें अतुल अस्ताचल में नहीं जाने दूँगा। .....

(ख) मैं तुम्हें असमान में उड़ने नहीं दूँगा। .....

(ग) मैं तुम्हें कुल पर थकने नहीं दूँगा। .....

(घ) मैं तुम्हें प्रगति की दशा में ले जाऊँगा। .....

(ङ) सफल होने के लिए मैं तुम्हें क्रम का महत्त्व समझाऊँगा। .....

रचनात्मक अभिव्यक्ति

श्रवण-वाचन

- अब आपके सामने अध्यापक/अध्यापिका एक कहानी सुनाएँगे। उसे ध्यानपूर्वक सुनकर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए– (अध्यापक/अध्यापिका श्रुतभाव ग्रहण हेतु पृष्ठ-120 देखें।)

(क) माजिद के दोस्त का क्या नाम था?

(ख) माजिद क्या बेचता था?

(ग) माजिद ने पतलून की जेब से क्या निकाला?

(घ) बटुए में कितने रुपए थे?

परियोजना-निर्माण

- सोए हुए लोगों को जगाने और समय के प्रति हमेशा सतर्क रहने की प्रेरणा देने वाली कविताएँ अनेक कवियों ने लिखी हैं। ऐसी चार कविताओं का संग्रह कीजिए।
- 'जागरण गीत' कविता का लयबद्ध गान कीजिए।
- समय का सदुपयोग न करने पर क्या-क्या हानियाँ होती हैं? कक्षा में चर्चा कीजिए।
- नीचे दिए दोहे की रचना संत कबीरदास जी ने की है। इस दोहे से वे मनुष्य को क्या संदेश दे रहे हैं–

काल करै सो आज कर, आज करै सो अब।
पल में परलय होयगी, बहुरि करैगो कब।।

लेखन

- 'कर्म का महत्त्व' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

Scanned with CamScanner

2

जल बैंक

(शिक्षाप्रद कहानी)

यह तो आप सब जानते हैं कि निरंतर पानी के बढ़ते दुरुपयोग से मानव, वनस्पति और बाकी जीवों का जीवन भी संकट में है क्योंकि जल ही जीवन है। तो क्यों न मिलजुल कर हम पानी का दुरुपयोग होने से रोकें, पर बिना किसी विलंब के। चूँकि अगर विलंब हुआ तो इस पाठ के प्रमुख पात्र चिंतामणि का सपना कहीं हकीकत में न बदल जाए।

*कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे इस पाठ को रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से पढ़ेंगे।*

एक नगर में चिंतामणि नाम का एक व्यक्ति रहता था। उसका जैसा नाम था वैसा ही स्वभाव था। वह यदि किसी चीज़ में उलझ जाता तो उसकी चिंता करते-करते सपने में खो जाता था। एक दिन वह बैठे-बैठे टेलीविज़न पर समाचार देख रहा था। पहली ख़बर थी–'पानी की **किल्लत** से लोग बूँद-बूँद के लिए तरस रहे हैं।' बस फिर क्या था! चिंतामणि को पानी की किल्लत के बारे में जानकर चिंता होने लगी और ये चिंता ऐसी बढ़ी कि उस चिंता की गहराई में उसकी आँख लग गई। अब वह सपनों की दुनिया में देखता है कि **चप्पे-चप्पे** पर जल बैंक खुल गए हैं। अगर आपको मोहल्लेवालों से कुछ ज़्यादा पानी मिल गया है तो चिंता की कोई बात नहीं। जाइए और उसे बैंक में जमा कर दीजिए। अगर आपको दस बालटी ज़्यादा पानी मिल गया है तो शुद्धता की जाँच के बाद बचा पानी बैंक के लॉकर में आपके नाम से रख दिया जाएगा। बैंक की इमारत के ऊपर बड़ी-बड़ी टंकियाँ हैं। वे **सूद** भी देते हैं। **सावधि** जमा योजना में सालभर बाद पानी की दस बालटियों के बदले बारह बालटी। सौदा महँगा नहीं है। वैसे भी आज-कल जिनके पास पानी है, वे पानीदार हो रहे हैं। यह तो आम जनता है, जो पानी-पानी हो रही है, बिना पानी के।

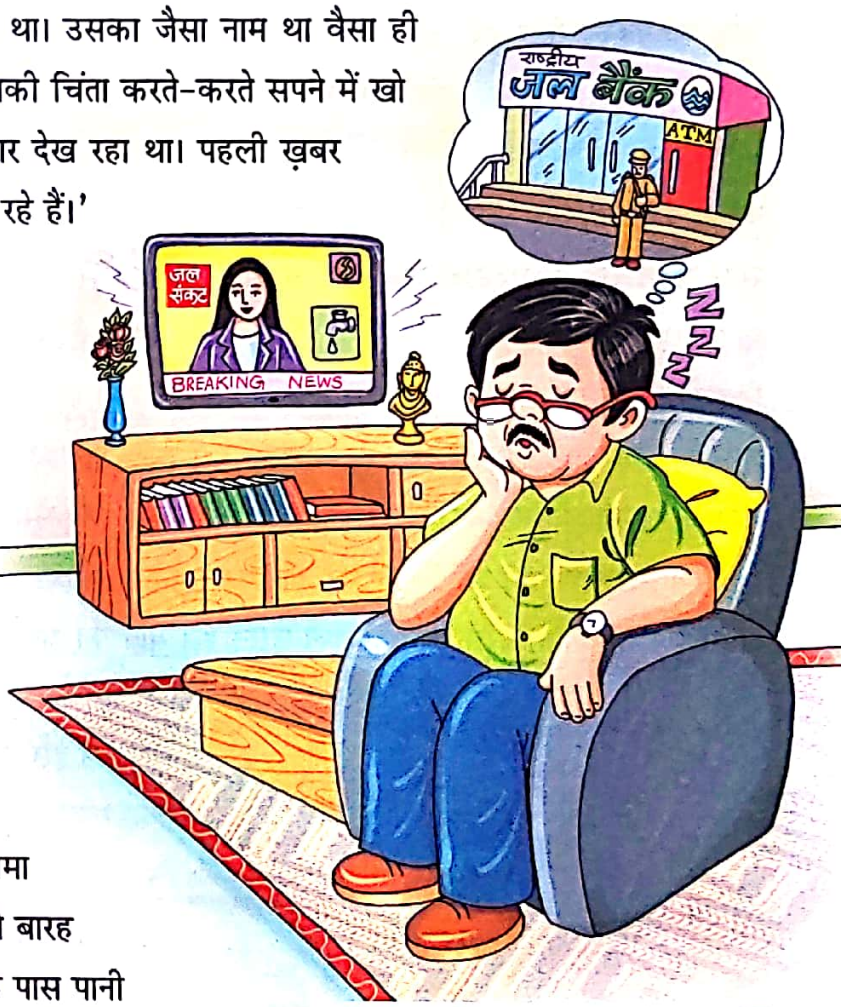

सोचिए और बताइए– सपनों की दुनिया से बाहर आने के बाद चिंतामणि क्या करेगा?

एक झूठ इस मौसम में बहुत चलने लगा है। घर में पानी पर्याप्त है। केवल वाशिंग मशीन में कपड़े धोने मुश्किल हो रहे हैं। ऐसे में लोगों को अवसर मिल जाता है, झूठ बोलने की अपनी आदत को भुनाने का। वे हर पड़ोसी से कहते-फिरते हैं–नहा-धोकर, कपड़े-बरतन निपटाने के बाद घर में पीने के लिए भी एक बूँद पानी नहीं है। अब ऐसे **हालात** में जल बैंक आपकी सहायता के लिए 24 घंटे तैयार रहेगा। यदि सच में पानी की ज़रूरत है तो तुरंत **ऋण** ले लें। बस आपका मकान

Scanned with CamScanner

गिरवी रहेगा। तुरंत पचास हज़ार लीटर पानी का आपका ऋण मंज़ूर। आपको हर महीने पाँच हज़ार लीटर **मूल** और एक हज़ार लीटर सूद भरना होगा। मूल-सूद नियमित देंगे तो दस माह में सिर्फ़ साठ हज़ार लीटर पानी बैंक को देंगे। हाँ, अगर हर महीने सूद न दिया तो आपके ऋण में जोड़कर **चक्रवृद्धि ब्याज** शुरू।

आपका रिश्तेदार पानी के लिए जूझ रहा है, कहीं कोई सौ किलोमीटर दूर, तो चिंता न करें। आप बैंक के माध्यम से उसे अपना अतिरिक्त जल भेज दें। ड्राफ्ट बनवाएँगे तो कोरियर से, वरना एम०टी० या टी०टी० भेज सकते हैं। पाँच हज़ार लीटर भेजने का ख़र्च केवल तीन बालटी। एक आसान रास्ता और भी है। बैंक ने कई ए०टी०एम० सेंटर खोल रखे हैं। ए०टी०एम० कार्ड आप अपने रिश्तेदार को दे दें। अपने खाते में पानी जमा करें और वो वहाँ निकाल लेगा। कैसे? सरल है। बटन दबाते ही ए०टी०एम० के नल से **आदेशानुसार** पानी निकलना शुरू हो जाएगा, बशर्ते कि आपके खाते में जमा हो। क्या कहा, खाता खोलना है? जल्दी कीजिए! सादा खाता दो बालटी, चेक-बुक वाला खाता चार बालटी। नल कनेक्शन का प्रमाण-पत्र, नल का फ़ोटो और लहरों-से लहराते आपके हस्ताक्षर...! खाता खुला नहीं कि आपकी चारों उँगलियाँ पानी में।

सोचिए और बताइए– ए०टी०एम० कार्ड का प्रयोग क्यों करते हैं?

तभी चिंतामणि की आँखें खुल गईं और वह सकपकाया-सा सपनों की दुनिया से बाहर आया तो बहुत घबराया हुआ था। अपने मन को शांत करके सबसे पहले उसने इस बात का धन्यवाद दिया कि यह हकीकत नहीं बल्कि एक सपना था। लेकिन चिंतामणि तो चिंतामणि है! चिंता करना वह कैसे छोड़ सकता है। अब उसे इस बात की चिंता होने लगी कि यदि पानी का दुरुपयोग नहीं रोका गया तो कहीं उसका यह सपना सच न हो जाए। अभी उसकी इस चिंता ने पैर पसारना शुरू किया ही था कि अचानक उसके कंधे को झटका-सा महसूस हुआ। "अरे चिंतामणि! अब किस चिंता को अपने ज़िगर से इस तरह लगाए बैठे हो कि तुम्हें मेरी आवाज़ भी नहीं सुनाई दे रही? कभी हमारे बारे में भी सोच लिया करो।" उसके दोस्त रामदयाल ने उसके कंधे पर हाथ रखकर **व्यंग्य कसा।**

"आओ बैठो रामदयाल!" दोस्त बैठा ही था कि चिंतामणि ने अपना सपना कह सुनाया और फिर बोला, "तो भाई, अब मुझे यह चिंता खाए जा रही है कि पानी के दुरुपयोग को रोका कैसे जाए!" रामदयाल ने मौका देखते ही चौका मारा और बोला, "भाई, फिर तो सबसे पहले

Scanned with CamScanner

अपनी कॉलोनी में ही लोगों को **जागरूक** करना होगा। जब अपने पड़ोसी मणिशंकर जी सुबह-सुबह पाइप लगाकर अपनी कार धो रहे होंगे तो चुपचाप जाकर नल बंद कर देंगे। यदि शर्मा जी अपने घर के आस-पास ठंडक लाने के लिए पानी को यूँ ही बहा रहे होंगे तो उन्हें भी मना करेंगे और साथ में मिसेज शर्मा के हाथ की बनाई चाय की चुस्की का मज़ा भी ले लेंगे।" चिंतामणि ज़ोर-से ठहाका मारकर हँस पड़ा। फिर बोला, "भाई, कहते तो तुम ठीक हो। इसी तरह अपनी कॉलोनी में जगह-जगह पानी बचाने के तरीके लिखकर चिपका देंगे।" उसकी बात को रामदयाल ने आगे बढ़ाते हुए कहा, "फिर भी अगर लोग न माने तो मणिशंकर जी के ऊपर आज़माने वाली **युक्ति** अपना लेंगे।"

"हाँ भाई! किसी-न-किसी को तो पहल करनी ही होगी। तभी ऐसी समस्याओं का अंत होगा।" अब चिंतामणि ने मन-ही-मन ठान लिया था कि जब तक पानी बचाने के प्रति लोगों को जागरूक नहीं कर लूँगा, तब तक चैन से नहीं बैठूँगा। अरे! यही तो पहचान है हमारे चिंतामणि की।

–अशोक गुजराती

मूल्य: जल ही जीवन है। इसे बेकार में न बहाएँ।

शब्द-अर्थ

चप्पा-चप्पा	–	हर जगह	**हालात**	–	स्थिति	**आदेशानुसार**	–	आज्ञा के अनुसार
सूद	–	ब्याज	**सावधि**	–	निश्चित समय	**किल्लत**	–	किसी चीज़ की कमी
ऋण	–	कर्ज़	**गिरवी**	–	बंधक रखी हुई चीज़	**जागरूक**	–	सजग, सतर्क
मूल	–	मूलधन	**युक्ति**	–	तरकीब	**व्यंग्य कसना**	–	मज़ाक करना या ताना मारना

चक्रवृद्धि ब्याज – वह ब्याज जिसमें संचित ब्याज भी मूलधन में शामिल हो जाए

☞ **वाचन/श्रुतलेख–** बालटी, चिंता, शुद्धता, चक्रवृद्धि, ड्राफ्ट, गिरवी, अतिरिक्त, दुरुपयोग, हस्ताक्षर, आदेशानुसार।

अभ्यास

कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ से

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) 'चप्पे-चप्पे पर जल बैंक खुल गए हैं।' इस कल्पना के पीछे क्या संकेत है?

(ख) कैसे हालात में जल बैंक आपकी सहायता के लिए तैयार रहता है?

(ग) चिंतामणि और रामदयाल ने अपनी कॉलोनी में किस तरह जागरूकता लाने के बारे में सोचा?

(घ) चिंतामणि की चिंता का अंत करने के लिए आप क्या सहयोग देंगे?

Scanned with CamScanner

लिखित

1. संकेत गद्यांश को पाठ में ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

संकेत– तभी चिंतामणि की आँखें ..... रखकर व्यंग्य कसा। (पृष्ठ-14)

(क) चिंतामणि किस दुनिया में खोया हुआ था?

(ख) चिंतामणि ने किस बात के लिए धन्यवाद दिया?

(ग) चिंतामणि पर व्यंग्य किसने कसा?

2. अति लघु उत्तर लिखिए–

(क) समाचार के माध्यम से चिंतामणि को किसके बारे में पता चला?

(ख) सावधि जमा योजना में सालभर बाद दस बालटी पानी के बदले कितना पानी मिलेगा?

(ग) ए०टी०एम० से पानी निकालने के लिए क्या शर्त है?

3. लघु उत्तर लिखिए–

(क) 'यह तो आम जनता है, जो पानी-पानी हो रही है, बिना पानी के।' इस पंक्ति का क्या अर्थ है?

(ख) जल बैंक में खाता कैसे खुलेगा?

(ग) सपनों की दुनिया से निकलने के बाद चिंतामणि को किस बात की चिंता होने लगी?

4. दीर्घ उत्तर लिखिए–

(क) यदि घर में पीने के लिए एक बूँद पानी नहीं है तो जल बैंक आपकी मदद कैसे करेगा?

(ख) पानी के लिए जूझ रहे रिश्तेदार की मदद करने के लिए आप क्या करेंगे?

पाठ से आगे

आपकी सोच-समझ

(क) 'चिंतामणि का जैसा नाम था वैसा ही स्वभाव था।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं? कारण सहित उत्तर लिखिए।

(ख) हमारी पृथ्वी के ज़्यादातर भाग पर पानी है, तो फिर पीने के पानी की समस्या क्यों उत्पन्न होती है?

अनुमान और कल्पना

☞ यदि चिंतामणि का सपना हकीकत में बदल जाए तो क्या होगा?

भाषा ज्ञान — संज्ञा, संज्ञा के भेद, मुहावरे

1. किसी प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को **संज्ञा** कहते हैं; जैसे– सावित्री, हरिद्वार, खुशी।

दिए गए वाक्यों में संज्ञा शब्दों को रेखांकित करके अलग लिखिए–

(क) चिंतामणि बैठे-बैठे टेलीविज़न देख रहा था। .....

(ख) मिसेज शर्मा के हाथ की बनाई चाय पिएँगे। .....

(ग) उसे दस बालटी ज़्यादा पानी मिल गया है। .....

(घ) बैंक की इमारत के ऊपर बड़ी-बड़ी टंकियाँ हैं। .....

(ङ) रामदयाल अपने दोस्त के घर गया। .....

Scanned with CamScanner

2. संज्ञा के तीन भेद होते हैं– **व्यक्तिवाचक संज्ञा** (स्मिता, मथुरा आदि), **जातिवाचक संज्ञा** (अध्यापक, बच्चे आदि) तथा **भाववाचक संज्ञा** (अच्छाई, विनम्रता आदि)

रेखांकित शब्दों में संज्ञा का कौन-सा भेद है? ✓ निशान लगाकर बताइए–

(क) चिंता की **गहराई** में उसकी आँख लग गई।

व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ जातिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा ☐

(ख) **रामदयाल** ने मौका देखते ही चौका मारा।

व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ जातिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा ☐

(ग) आपका **रिश्तेदार** पानी के लिए जूझ रहा है।

व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ जातिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा ☐

(घ) चिंतामणि को सपना देखने के बाद **घबराहट** होने लगी।

व्यक्तिवाचक संज्ञा ☐ जातिवाचक संज्ञा ☐ भाववाचक संज्ञा ☐

3. कोष्ठक में दिए गए शब्दों से भाववाचक संज्ञा शब्द बनाकर खाली जगह भरिए–

(क) चिंतामणि ..... से ही हर बात पर चिंता करता था। (बच्चा)

(ख) ..... की जाँच के बाद बचा पानी आपके नाम से रख दिया जाएगा। (शुद्ध)

(ग) लोगों को पानी ..... से उपलब्ध नहीं था। (सरल)

(घ) हमें पानी बचाने के प्रति लोगों में ..... लानी होगी। (जागरूक)

4. दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर इनका वाक्य-प्रयोग कीजिए–

(क) आँख लगना (ख) पैर पसारना

रचनात्मक अभिव्यक्ति

ये भी जानें

☞ अपने किसी रिश्तेदार या सगे-संबंधी को पैसे भेजने के लिए एम०टी० यानी 'मेल ट्रांसफर' और टी०टी० यानी 'टेलीग्राफ़िक ट्रांसफर' का इस्तेमाल करते हैं। डी०डी० का पूरा नाम 'डिमांड ड्राफ्ट' है जो बैंक द्वारा किसी के नाम पर जारी किया जाता है।

☞ पृथ्वी पर जल का स्तर दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है जिससे हमें आने वाले समय में भारी संकट का सामना करना पड़ सकता है। इस संकट से बचने के लिए 'जल संसाधन मंत्रालय' के द्वारा बारिश के जल को कृत्रिम तालाब बनाकर उसमें संरक्षित किया जाता है तथा आवश्यकता पड़ने पर उस जल का प्रयोग किया जाता है।

परियोजना-निर्माण

☞ यह पाठ आपको कैसा लगा? info@cordova.co.in पर मेल करके बताइए।

☞ आप अपने विद्यालय में जल का दुरुपयोग होने से रोकने के लिए क्या-क्या करेंगे? इस बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण बिंदुओं की सूची बनाकर अध्यापक/अध्यापिका की मदद से 'जल संरक्षण जागरूकता अभियान' की शुरुआत कीजिए। इस अभियान में आपको पानी बचाने के प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए कुछ सूक्तियों की ज़रूरत होगी। नीचे कुछ सूक्तियाँ दी जा रही हैं, आप इनसे मदद लेकर और भी कई सुंदर-सुंदर सूक्तियाँ बनाकर अपने विद्यालय में लगा सकते हैं–

(i) पानी है अमूल्य, पानी बचाने में आपका सहयोग होगा बहुमूल्य। (ii) पानी की रक्षा, देश की सुरक्षा।

Scanned with CamScanner

शोध

- समर्सिबल पंप क्या है? इससे किस तरह भूजल के स्तर को हानि पहुँच रही है?

इसे भी हल करें

- यदि 50 हज़ार लीटर पानी का ऋण चुकाने के लिए दस महीने में 60 हज़ार लीटर पानी देना पड़ता है तो 60 हज़ार लीटर पानी का ऋण बारह महीने में चुकाने के लिए कितना पानी देना पड़ेगा?

लेखन

- पानी हमारे जीवन में बहुत कीमती है। क्या आप जानते हैं कि कुछ कामों को सही तरीके से करने से आप भी पानी के दुरुपयोग को रोककर इसकी बचत कर सकते हैं। दिए गए चित्रों में पानी का दुरुपयोग हो रहा है। आप पानी का सदुपयोग कैसे करेंगे? उदाहरणानुसार लिखकर बताइए–

दुरुपयोग	सदुपयोग
1.	1. फव्वारे (शॉवर) की जगह बालटी में पानी भरकर नहाने से पानी को बचाया जा सकता है।
2.	2.
3.	3.
4.	4.

पाठ में प्रयुक्त शब्दों की वर्तनी के पुराने और नए रूप

पुराना रूप	नया रूप	पुराना रूप	नया रूप	पुराना रूप	नया रूप
चक्रवृद्धि	चक्रवृद्धि	शुद्धता	शुद्धता	बाल्टी	बालटी
ठण्डक	ठंडक	चिन्ता	चिंता	बर्तन	बरतन

Scanned with CamScanner

3 सच का सौदा

(प्रेरक कहानी)

झूठ, फ़रेब, अधर्म, स्वार्थ आदि पर परदा डालकर सत्य, कर्तव्य, धर्म, संयम आदि गुणों पर भाषण देने वाले बहुत से लोग इस संसार में मिल जाएँगे। लेकिन जो निज स्वार्थ को परे रख सदा सत्य के संग चले, ऐसे सूरमा का मिलना बहुत कठिन है। इस कहानी के पात्र पंडित सर्वदयाल सच का सौदा करने वाले उन्हीं सत्यनिष्ठ लोगों की श्रेणी में शामिल हैं।

*कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे इस पाठ को रोचक एवं प्रभावशाली ढंग से पढ़ेंगे।*

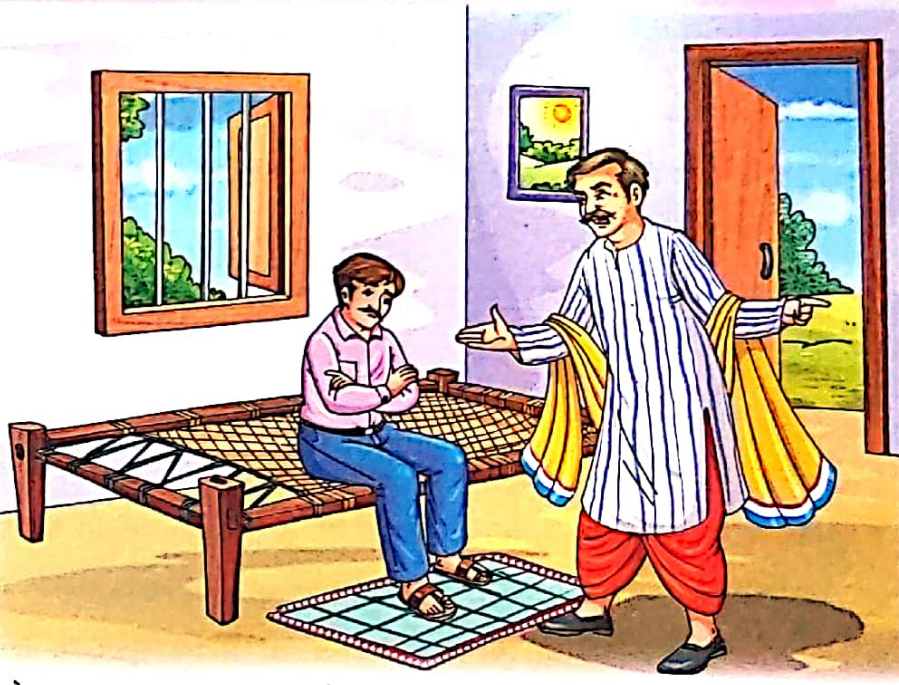

पंडित सर्वदयाल के पिता पंडित शंकरदत्त पुराने ज़माने के आदमी थे। उनका विचार था कि बेटा अंग्रेज़ी बोलता है, पतलून पहनता है, टाई लगाता है, इसे नौकरी न मिलेगी, तो और किसे मिलेगी! परंतु जब बहुत दिन गुज़र गए और सर्वदयाल को कोई नौकरी नहीं मिली तो उनका **धीरज** टूट गया।

बेटे से बोले, "अब तू कुछ नौकरी भी करेगा या नहीं? मिडिल पास लड़के रुपयों से घर भर देते हैं।"

यह सुनकर सर्वदयाल को ऐसा लगा मानो किसी ने कलेजे में तीर-सा मार दिया।

दोपहर का समय था। सर्वदयाल अख़बार में नौकरी वाला पेज देख रहे थे। एकाएक एक विज्ञापन देखकर उनका हृदय धड़कने लगा। अंबाला के प्रसिद्ध रईस ठाकुर हनुमंतराय सिंह एक **मासिक** पत्र 'रफ़ीक हिंद' के नाम से निकालने वाले थे। उसके लिए उन्हें एक संपादक की आवश्यकता थी। उच्च श्रेणी का शिक्षित और नवयुवक हो तथा लिखने में अच्छा अभ्यास रखता हो। वेतन पाँच सौ रुपए मासिक। फिर क्या था! सर्वदयाल ने प्रार्थना-पत्र लिखा और रजिस्ट्री करा दिया।

सोचिए और बताइए- क्या सर्वदयाल को यह नौकरी मिलेगी?

कई दिन इंतज़ार करने के बाद डाकिया आया। सर्वदयाल लपके-लपके दरवाज़े पर गए और चिट्ठी देखकर उछल पड़े। लिखा था– "स्वीकार है, आ जाओ।"

वे शाम की गाड़ी में बैठे, तो मन बहुत खुश था। सोचते थे, "यह मेरा **सौभाग्य** है, जो ऐसा अवसर मिला।" देर तक इसी धुन और आनंद में मगन रहने के बाद पता नहीं कितने बजे उन्हें नींद आई, परंतु आँखें खुलीं, तो गाड़ी अंबाला स्टेशन पर पहुँच चुकी थी। सर्वदयाल बैग लिए नीचे उतरे और स्टेशन से बाहर आकर एक गाड़ी पर सवार हुए।

गाड़ी चली और एक **आलीशान** कोठी के सामने जाकर रुक गई।

ठाकुर हनुमंतराय सिंह नवयुवक थे। मुसकराते हुए आगे बढ़े और बड़े आदर से सर्वदयाल से हाथ मिलाकर बोले, "आप आ गए। कहिए, रास्ते में कोई परेशानी तो नहीं हुई?"

Scanned with CamScanner

सर्वदयाल ने धड़कते हुए हृदय से उत्तर दिया, "जी नहीं।" वे बात का रुख बदलते हुए बोले, "**पत्रिका** कब से निकलेगी?"

ठाकुर साहब ने हँसकर उत्तर दिया, "यह प्रश्न मुझे आप से करना चाहिए था।"

उस दिन 15 मार्च थी। सर्वदयाल कुछ सोचकर बोले, "पहला अंक पहली अप्रैल को निकल जाएगा।"

"अच्छी बात है, परंतु इतने थोड़े समय में लेख मिल जाएँगे या नहीं, इस बात का विचार आप कर लीजिएगा। वैसे यह सुनकर आपको हैरानी होगी कि इस विज्ञापन के उत्तर में लगभग दो हज़ार पत्र आए थे। परंतु आपका पत्र सच्चाई से भरा था और यह वह गुण है, जिसके सामने मैं सब कुछ बेकार समझता हूँ।"

इस तरह दिन बीतते गए और जब अप्रैल की पहली तारीख को 'रफ़ीक हिंद' का पहला अंक निकला, तो पढ़े-लिखे लोगों में शोर मच गया और पंडित सर्वदयाल के नाम की जहाँ-तहाँ चर्चा होने लगी। 'रफ़ीक हिंद' के पहले अंक ने उनको प्रथम श्रेणी के संपादकों की सूची में ला बिठाया।

इसी तरह एक वर्ष बीत गया। सर्वदयाल को अपना जीवन एक आनंदमय यात्रा की तरह लग रहा था। पर ऐसा ज़्यादा दिन न ठहर सका।

अंबाला की म्युनिस्पैलिटी का सदस्य चुनना था, तो ठाकुर हनुमंतराय सिंह भी एक पक्ष की ओर से सदस्यता के लिए खड़े हुए और उनके मुकाबले में खड़े हुए– लाला हशमतराय, जो हाईस्कूल के हेडमास्टर थे, वेतन थोड़ा लेते थे, कपड़े साधारण पहनते थे। लोगों की सेवा के लिए हर समय तैयार रहते थे।

ठाकुर हनुमंतराय सिंह के वचन और कर्म में बड़ा अंतर था। उनकी सेवा **व्याख्यान** झाड़ने, लेख लिखने और प्रस्ताव पास कर देने तक ही सीमित थी। इससे परे जाना वे ज़रूरी नहीं समझते थे। यह बात पंडित सर्वदयाल को अच्छे से मालूम थी। इसलिए उन्होंने तय कर लिया कि इस पद के लिए लाला हशमतराय ही सही हैं।

सोचिए और बताइए– पंडित जी किसके पक्ष में भाषण देंगे?

रविवार का दिन था। पंडित सर्वदयाल का भाषण सुनने के लिए हज़ारों लोग इकट्ठे हो रहे थे। पंडित जी मंच पर आए और बोले, "मैं यह नहीं कहता कि आप **अमुक** मनुष्य को अपना वोट दें। किंतु इतना ज़रूर कहता हूँ कि जो कुछ करें, सोच-समझकर करें। इस वोट का अधिकारी वह मनुष्य है, जिसके हृदय में **करुणा** तथा देश और जाति के प्रति **सहानुभूति** हो। जो साधारण और छोटे लोगों में घूमता हो और मानव को ऊँचा उठाने में रात-दिन मगन रहता हो।"

ठाकुर हनुमंतराय सिंह को यकीन था कि पंडित जी उनके पक्ष में बोलेंगे, परंतु भाषण सुनकर उनके तन में आग लग गई। कुछ देर बाद पंडित सर्वदयाल बुलाए गए। उनके आने पर ठाकुर साहब ने कहा, "क्यों पंडित जी! मैंने क्या **अपराध** किया है जो आप मेरे खिलाफ़ बोल रहे हैं?"

पंडित सर्वदयाल बोले, "ठाकुर साहब, मैंने सिर्फ़ सच का साथ दिया है।"

"यह सौदा आपको बहुत महँगा पड़ेगा।" ठाकुर साहब क्रोध में बोले।

पंडित सर्वदयाल ने सिर ऊँचा उठाकर उत्तर दिया, "मैं इसके लिए सब कुछ देने को तैयार हूँ।"

ठाकुर साहब ने पूछा, "नौकरी और **प्रतिष्ठा** भी?"

"हाँ, नौकरी और प्रतिष्ठा भी।"

"उस हशमतराय के लिए?"

Scanned with CamScanner

"नहीं, सच्चाई के लिए।"

इसके दूसरे दिन पंडित सर्वदयाल ने **त्याग-पत्र** भेज दिया और स्वीकार भी हो गया।

लाला हशमतराय ने यह समाचार सुना, तो भागे-भागे पंडित सर्वदयाल के पास आए और खूब समझाया कि वे अपना त्याग-पत्र वापस ले लें लेकिन इसका उन पर कोई असर नहीं हुआ।

सोचिए और बताइए–
चुनाव में कौन विजयी होगा?

इधर ठाकुर हनुमंतराय सिंह ने सोचा, "यदि अब भी सफलता न मिली, तो नाक कट जाएगी।" धनवान पुरुष थे, थैली का मुँह खोल दिया। वोटरों पर रुपए की बरसात होने लगी।

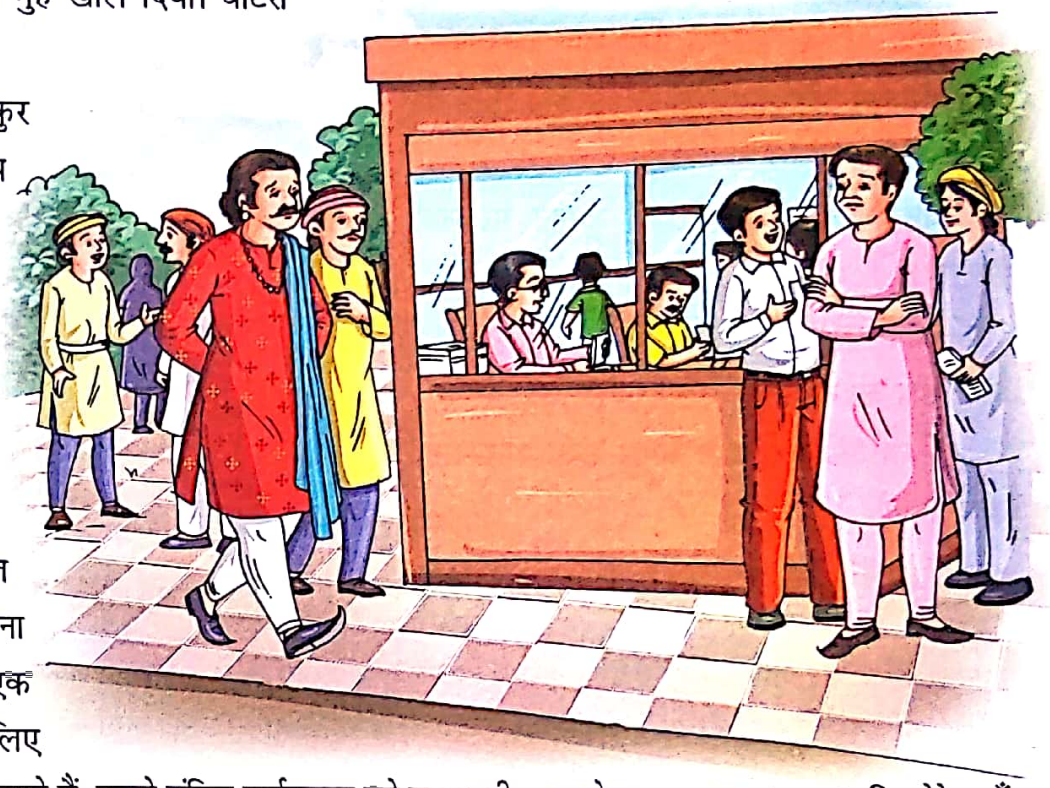

चुनाव का दिन आया। ठाकुर हनुमंतराय सिंह और लाला हशमतराय दोनों के हृदय धड़कने लगे। दोपहर का समय था। पर्चियों की गिनती हो रही थी। ठाकुर हनुमंतराय को पूरा यकीन था कि वे ही विजयी होंगे। परंतु परिणाम निकला, लाला हशमतराय के वोट अधिक थे।

इसके पंद्रहवें दिन पंडित सर्वदयाल रावलपिंडी में अपने घर के लिए रवाना हुए। **विवश** होकर उन्होंने वहाँ एक दुकान खोली परंतु दुकान चलाने के लिए जो चालें चली जाती हैं, जो झूठ बोले जाते हैं, उनसे पंडित सर्वदयाल को **घृणा** थी। उनको मान इस बात का था कि मेरे यहाँ सच का सौदा है।

सुबह का समय था। पंडित सर्वदयाल अपनी दुकान पर बैठे 'रफ़ीक हिंद' का नया अंक देख रहे थे। इतने में उनकी दुकान के सामने एक मोटरकार आकर रुकी और उसमें से ठाकुर हनुमंतराय सिंह उतरे। उन्हें देखकर पंडित सर्वदयाल को हैरानी हुई।

ठाकुर हनुमंतराय ने पास आकर कहा, "अहा! पंडित जी बैठे हैं। यह दुकान अपनी है क्या?"

"जी हाँ।" पंडित सर्वदयाल ने धीरज से उत्तर दिया।

ठाकुर साहब ने उनको चुभती हुई दृष्टि से देखकर कहा, "यह काम आपकी योग्यता के **अनुकूल** नहीं है।"

पंडित सर्वदयाल ने **बेपरवाही** से उत्तर दिया, "संसार में बहुत से मनुष्य ऐसे हैं, जिनको वह करना पड़ता है जो उनके योग्य नहीं होता। मैं भी उनमें से एक हूँ।"

ठाकुर साहब सोचने लगे, "कैसा सूरमा है, जो जीवन के कठिन समय में भी **सुमार्ग** से इधर से उधर नहीं हटता। चोट पर चोट पड़ती है परंतु हृदय सच के सौदे को नहीं छोड़ता।" उन्होंने पंडित सर्वदयाल को गले से लगा लिया और कहा, "आप धन्य हैं! मैंने आप पर बहुत अन्याय किया है। मुझे माफ़ कर दीजिए। 'रफ़ीक हिंद' को सँभालिए। परमात्मा करे, आप पहले

Scanned with CamScanner

की तरह सच्चे, विश्वासी, न्यायप्रिय और दृढ़ बने रहें, मेरी यही कामना है। मैंने हज़ारों मनुष्य देखे हैं, जो कर्तव्य और धर्म पर दिन-रात बोल बोलते नहीं थकते, परंतु जब परीक्षा का समय आता है तो सब कुछ भूल जाते हैं। एक आप हैं जिन्होंने इस जादू पर विजय प्राप्त की है।"

पंडित सर्वदयाल की आँखों से आँसू छलकने लगे। गर्व ने गरदन झुका दी। उन्होंने प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था।

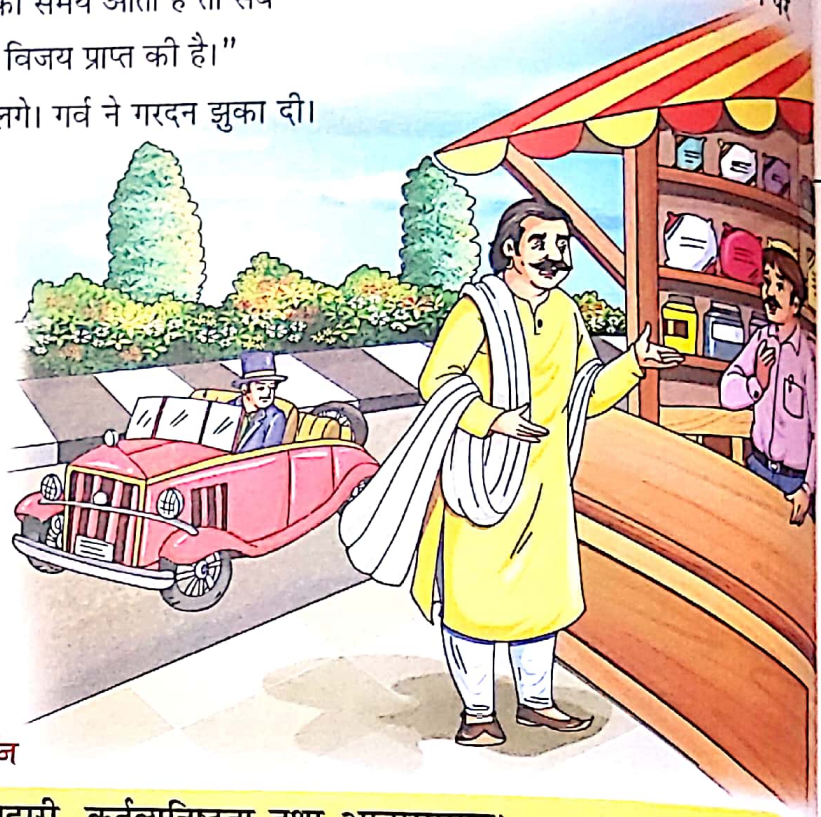

ठाकुर हनुमंतराय जब मोटर में बैठे। उनके साथ एक अंग्रेज़ मित्र भी बैठा था। उसने पूछा, "वेल, ठाकुर साहब! इस दुकान पर क्या इतना डेर खड़ा माँगटा?"

"वह चीज़ जो किसी भी दुकान पर नहीं मिलती।"

"कौन-सा?"

"सच का सौदा!"

लेकिन अंग्रेज़ कुछ न समझ सका और मोटर चलने लगी।

—सुदर्शन

मूल्य: सच्चाई, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठता तथा आत्मसम्मान।

लेखक परिचय : लेखक सुदर्शन हिंदी के उन गिने-चुने कथाकारों में से हैं जिनकी कहानियों में यथार्थ और आदर्श का अद्भुत मिश्रण है। छोटी-से-छोटी घटना को संवेदनशील ढंग से प्रस्तुत करने की कला और सामाजिक बुराइयों को उजागर करने का साहस इनकी कहानियों में बखूबी देखने को मिलता है।

सुदर्शन जी का जन्म सियालकोट (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। लाहौर की उर्दू पत्रिका 'हज़ार दास्ता' में इनकी कई कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। इन्हें गद्य और पद्य दोनों में महारत हासिल थी। 'हार की जीत' सुदर्शन जी की पहली कहानी है।

शब्द-अर्थ

प्रतिष्ठा	–	मान-मर्यादा, इज़्ज़त	**धीरज**	–	धैर्य	**व्याख्यान**	–	वर्णन करना
सुमार्ग	–	अच्छा रास्ता	**आलीशान**	–	बहुत बड़ा और भव्य	**अमुक**	–	कोई खास
सहानुभूति	–	हमदर्दी, संवेदना	**पत्रिका**	–	मैगज़ीन	**सौभाग्य**	–	अच्छा भाग्य
घृणा	–	नफ़रत	**त्याग-पत्र**	–	इस्तीफ़ा	**मासिक**	–	महीने का
विवश	–	लाचार	**करुणा**	–	दया	**अनुकूल**	–	मेल रखने वाला
अपराध	–	गुनाह, गलती	**बेपरवाही**	–	बेफ़िक्री			

☞ **वाचन/श्रुतलेख–** रजिस्ट्री, सौदा, अंबाला, नवयुवक, सहानुभूति, बेपरवाही, कर्तव्य, प्रतिष्ठा, न्यायप्रिय, परमात्मा।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

कक्षा में स्मार्ट बोर्ड पर कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ से

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) पंडित सर्वदयाल कैसे आदमी थे?

(ख) पंडित सर्वदयाल ने संपादक के पद पर रहते हुए इतने कम समय में ख्याति कैसे प्राप्त की होगी?

(ग) कौन-सी चीज़ थी जो पंडित सर्वदयाल की दुकान के अलावा कहीं और नहीं मिल सकती थी?

लिखित

1. संकेत गद्यांश को पाठ में ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

संकेत– पंडित सर्वदयाल के पिता ..... रजिस्ट्री करा दिया। (पृष्ठ-19)

(क) पंडित सर्वदयाल के पिता क्या सोचते थे?

(ख) हनुमंतराय सिंह किस नाम से मासिक पत्र निकालने वाले थे?

(ग) संपादक के पद के लिए क्या योग्यता रखी गई थी?

2. अति लघु उत्तर लिखिए–

(क) पंडित सर्वदयाल के पिता का क्या नाम था?

(ख) 'रफ़ीक हिंद' का पहला अंक कब निकला?

(ग) म्युनिस्पैलिटी के चुनाव में ठाकुर हनुमंतराय सिंह के विपक्ष में कौन खड़ा हुआ?

3. लघु उत्तर लिखिए–

(क) ठाकुर हनुमंतराय सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ख) लाला हशमतराय म्युनिस्पैलिटी की सदस्यता प्राप्त करने के लिए उपयुक्त उम्मीदवार क्यों थे?

(ग) एक दुकानदार के रूप में पंडित सर्वदयाल को कौन-से कामों से घृणा थी तथा उन्हें किसका मान था?

4. दीर्घ उत्तर लिखिए–

(क) चुनाव के समय पंडित सर्वदयाल द्वारा दिए गए भाषण की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

(ख) 'लाला हशमतराय का स्वभाव ठाकुर हनुमंतराय के स्वभाव से एकदम विपरीत था।' स्पष्ट कीजिए।

पाठ से आगे

आपकी सोच-समझ

☞ इस कहानी का नाम 'सच का सौदा' क्यों रखा गया? यदि आपसे इस कहानी को नया नाम देने के लिए कहा जाए तो आप क्या नाम देंगे और क्यों?

Scanned with CamScanner

☞ यदि आपके मित्र ने गलत काम किया है और इस बारे में आपको मालूम है तो आप अपने मित्र का साथ देंगे या सच्चाई के साथ खड़े होंगे और क्यों?

भाषा ज्ञान — वचन, लिंग, समुच्चयबोधक शब्द, मुहावरे

1. कोई स्त्रीलिंग शब्द अकारांत या आकारांत हो तो बहुवचन बनाते समय 'अ' का 'एँ' हो जाता है तथा 'आ' वाले शब्द के अंत में 'एँ' जुड़ जाता है; जैसे– आवाज़ – आवाज़ें, महिला – महिलाएँ।

उपर्युक्त जानकारी के आधार पर आप दिए गए शब्दों के उचित बहुवचन रूप लिखिए–

दुकान	–	.....	चिंता	–	.....
आँख	–	.....	पत्रिका	–	.....

इसी तरह, किसी भी शब्द के अंत में 'ई' की मात्रा हो तो बहुवचन बनाते समय वह 'इ' की मात्रा में बदल जाती है तथा शब्द के अंत में 'याँ' जुड़ जाता है; जैसे– रानी – रानियाँ। **अब आप दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप लिखिए–**

नौकरी	–	.....	पर्ची	–	.....
गाड़ी	–	.....	श्रेणी	–	.....

2. शब्द के अंत में **'अ'** के स्वर को **'आ'** में बदलकर स्त्रीलिंग शब्द बनता है; जैसे– अध्यक्ष (**पुल्लिंग**) – अध्यक्षा (**स्त्रीलिंग**) इसी तरह, पुल्लिंग शब्द के अंत में 'अ, आ, इ, ई, उ, ऊ' के स्थान पर **'आइन'** लगाकर भी स्त्रीलिंग शब्द बनता है; जैसे– चौधरी (**पुल्लिंग**) – चौधराइन (**स्त्रीलिंग**) **दी गई जानकारी के आधार पर दिए गए शब्दों के लिंग बदलकर लिखिए–**

पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग
सुत	–	.....सुता.....	लाला	–	.....ललाइन.....
प्रिय	–	.....	ठाकुर	–	.....
भवदीय	–	.....	पंडित	–	.....
सदस्य	–	.....	गुरु	–	.....
प्रधानाचार्य	–	.....	बाबू	–	.....

3. 'सोहन केला **और** अमरूद खाता है।' इस वाक्य में रेखांकित शब्द **समुच्चयबोधक** है। इसी तरह तथा, या, किंतु, परंतु आदि भी समुच्चयबोधक शब्द हैं। **कोष्ठक में से उचित समुच्चयबोधक शब्द चुनकर खाली जगह भरिए–**

(क) लेख मिल जाएँगे ..... नहीं, इस बात का विचार आप कर लीजिएगा। (या / और)

(ख) कोठी में नहीं, ... नगर की एक गली में उनका आवास था। (ताकि / बल्कि)

(ग) मैं यह नहीं कहता ..... आप अमुक मनुष्य को अपना वोट दें। (अथवा / कि)

(घ) ठाकुर हनुमंतराय सिंह ..... लाला हशमतराय दोनों के हृदय धड़कने लगे। (और / परंतु)

(ङ) चोट पर चोट पड़ती है ..... हृदय सच के सौदे को नहीं छोड़ता। (परंतु / या)

4. **दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए–**

(क) कलेजे में तीर मारना (ख) तन में आग लगना (ग) नाक कटना

Scanned with CamScanner

रचनात्मक अभिव्यक्ति

परियोजना-निर्माण

- आपके घर कौन-सा अख़बार या पत्रिका आती है? उसकी विशेषताएँ बताते हुए कुछ और समाचार-पत्र एवं पत्रिकाओं के नाम भी बताइए।

शोध

- समाचार-पत्र या पत्रिका में संपादक के क्या-क्या कार्य होते हैं?
- भारत में वोट डालने के लिए न्यूनतम आयु क्या है? क्या इंग्लैंड और अमेरिका में भी वोट डालने की न्यूनतम आयु यही है? पता लगाकर लिखिए।

लेखन

- दिए गए प्रारूप के अनुसार मासिक पत्रिका की सदस्यता प्राप्त करने के लिए संपादक के नाम पत्र लिखिए–

सेवा में
संपादक
समाचार-पत्र का नाम – .....
पता – .....
दिनांक – .....
विषय – .....
संबोधन – .....
मुख्य विषय – .....
भवदीय/भवदीया – .....
पत्र लेखक का नाम – .....
पता – .....

हँसने की बारी

Scanned with CamScanner

केवल पढ़ने के लिए

आइए, पत्रिका निकालें

बहुत से बच्चों को लेखक बनने का शौक होता है—अपना नाम पत्रिकाओं में छपा देखने का, बड़े होने पर अपने नाम की किताब छपी देखने का। यह कोई बुरी बात नहीं बल्कि अच्छी बात है। दुनिया के अधिकतर बड़े लेखकों ने अपनी पत्रिकाएँ निकाली हैं। आप भी अपनी पत्रिका निकाल सकते हैं।

बाज़ार से रूलदार कागज़ ले आइए। अपने भाई-बहनों से, अपने विद्यालय और मोहल्ले के साथियों से कहिए कि पत्रिका निकालने जा रहे हैं। वे आपकी पत्रिका के लिए कुछ लिखें-कविता, कहानी, लेख, चुटकुले जो भी जी में आए। इसके लिए आपको अपनी रचना दे दें।

जब सारी रचनाएँ इकट्ठी कर लें तब उन्हें साफ़-साफ़ हाथ से रूलदार कागज़ पर लिख लें।

पत्रिका को खूबसूरत बनाने के लिए उसका कवर मोटे कागज़ का रखें और उस पर रंगीन कागज़ व रंग से सजावट कर लें। अपनी पत्रिका का कुछ नाम रख लें। पृष्ठों पर अंक डाल लें। शुरू में एक सूची बना लें। किस पृष्ठ पर किसकी रचना है वहाँ लिख दें। रंगीन पेंसिलों से हर पृष्ठ का हाशिया बेल-बूटेदार बना सकते हैं।

अपनी पत्रिका निकालने के लिए आप इन बातों का ज़रूर ध्यान रखिए—

1. हिज्जे दुरुस्त हो और भाषा और व्याकरण की अशुद्धियाँ न हों। किसी बड़े को पहले दिखा सकते हैं।
2. अपनी लिखी मौलिक रचना को लेख, कहानी, कविता जो कुछ भी हो पहला स्थान दें। दूसरे की प्रिय रचना को दूसरा स्थान दें। चोरी की रचना न दें।
3. लिखने-लिखाने से पहले यदि साथी लेखक चाहते हैं तो उनसे बात कर लें। क्या लिख रहे हैं? उस पर साथ मिलकर विचार कर लें।
4. जब आपकी पत्रिका तैयार हो जाए तो सारे लेखक साथियों को इकट्ठा करें और यदि माँ चाय-पकौड़ी का इंतज़ाम कर दें तो क्या कहने!
5. पत्रिका के अंत में कुछ पृष्ठ कोरे छोड़ना न भूलें। इन पर अपने माता-पिता, अध्यापक या आस-पास के कुछ छोटे-बड़े लेखक हों तो उनसे उनकी राय लिखवा लें। फिर विद्यालय खुलने पर अपने-अपने शिक्षकों को भी दिखाएँ, उनकी राय लिखवाएँ।

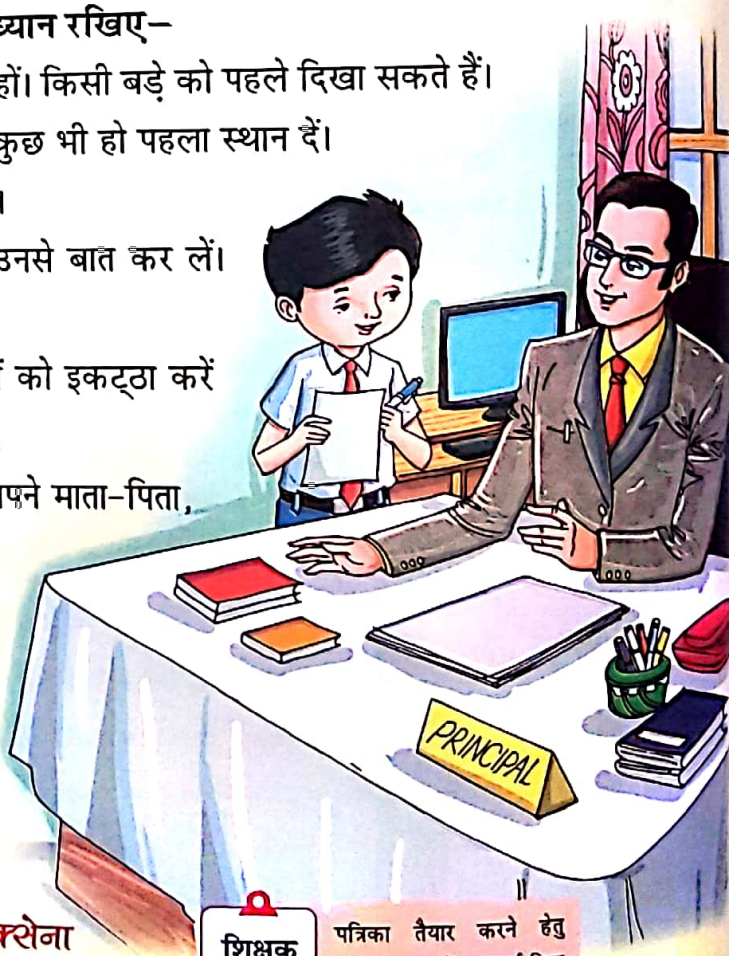

दुनिया के बड़े लेखकों ने अपनी खुशी के लिए शुरू-शुरू में अपने हाथ से लिखी पत्रिकाएँ निकाली हैं। चाहे तो उनका यह रास्ता भी अपना सकते हैं। हमारी शुभकामनाएँ अभी से लें!

—सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

शिक्षक के लिए पत्रिका तैयार करने हेतु ग्रीष्मावकाश में गृहकार्य दिया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

4

पृथ्वीराज चौहान

(ऐतिहासिक नाटक)

हिंदुस्तान का इतिहास कई वीर-वीरांगनाओं की शूरगाथा को दर्शाता है। उन्हीं में से एक थे दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान, जिन्होंने पूर्ण निष्ठा के साथ अपने राज्य के आत्मसम्मान की रक्षा की। उन्होंने गजनी के सुलतान मोहम्मद गौरी को युद्ध क्षेत्र में कई बार हराया। यहाँ तक कि बंदी बनाए जाने के बाद भी उन्होंने अपने राज्य के स्वाभिमान को हमेशा बनाए रखा।

*कक्षा में **स्मार्ट बोर्ड** पर **कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर** का प्रयोग करें, जिसके माध्यम से बच्चे इस पाठ को फ़िल्म की भाँति रुचि लेकर पढ़ेंगे।*

हम इतिहास के 12वीं सदी के पन्नों को खोलेंगे तो देखेंगे कि.... हाथ में तलवार लिए गजनी का सुलतान मोहम्मद गौरी हिंदुस्तान के राज्यों पर धावा बोलता और लूटपाट करता। वह चाहता था कि गजनी सबसे धनी देश बने और हिंदुस्तान की तरह 'सोने की चिड़िया' कहलाए। अब उसकी निगाहें दिल्ली पर टिकी थीं। वही दिल्ली जिसके सिंहासन पर पृथ्वीराज चौहान **विराजमान** थे। वे बहुत वीर और युद्धकला में निपुण योद्धा थे। **शब्दबेध** तीरंदाज़ी में तो वे माहिर थे।

पहला भाग

मोहम्मद गौरी – हमने बड़े-से-बड़े राज्यों को जीता है लेकिन जितना ख़ज़ाना दिल्ली में है उतना कहीं और नहीं। अगर हम दिल्ली के ख़ज़ाने को लूट लें तो हमारा **मुल्क** सबसे धनी मुल्क बन जाएगा और 'सोने की चिड़िया' कहलाएगा।

मंत्री – सुलतान, माफ़ी चाहता हूँ! दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान युद्ध कौशल में माहिर हैं। उनको पराजित करना लोहे के चने चबाने जैसा होगा।

मोहम्मद गौरी – तो ठीक है। हम भी पृथ्वीराज चौहान की वीरता को देखना चाहते हैं। सेनापति! दिल्ली पर हमला करने की तैयारी करो।

(इधर दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान जो सिंहासन पर विराजमान हैं उनके कानों तक युद्ध की सूचना पहुँचती है।)

पृथ्वीराज का दूत – महाराज की जय हो! अभी-अभी सूचना मिली है कि गजनी का सुलतान मोहम्मद गौरी दिल्ली पर आक्रमण करने की तैयारी में है।

पृथ्वीराज चौहान – (जोश में) पृथ्वीराज चौहान इतना कमज़ोर नहीं कि मोहम्मद गौरी जैसे **तुच्छ** लुटेरे से **भयभीत** हो जाए। हम राजपूत हैं राजपूत! हम किसी के आक्रमण से नहीं डरते। करने दो उसे हमला।

(गौरी दिल्ली पर हमला बोल देता है। पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के बीच **घमासान** युद्ध होता है और इस युद्ध में मोहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान के हाथों पराजित होता है।)

Scanned with CamScanner

(अब बंदी बना गौरी पृथ्वीराज चौहान के सामने सिर झुकाए माफ़ी की भीख माँगता है।)

मोहम्मद गौरी – पृथ्वीराज, मैंने दिल्ली पर आक्रमण करने की जो **गुस्ताख़ी** की है, उसके लिए मुझे माफ़ कर दो। कहते हैं कि हिंदुस्तान के सुलतान दुश्मनों को भी माफ़ करने का हृदय रखते हैं।

पृथ्वीराज चौहान – मोहम्मद गौरी, तुमने ठीक सुना है। हम **निहत्थे** पर वार नहीं करते, चाहे वो हमारा शत्रु ही क्यों न हो! हम तुम्हें भी माफ़ कर सकते हैं लेकिन तुम्हें वचन देना होगा कि आगे से आँख उठाकर भी हिंदुस्तान की तरफ़ नहीं देखोगे।

मोहम्मद गौरी – ख़ुदा की कसम सुलतान! मैं हिंदुस्तान को कभी हानि नहीं पहुँचाऊँगा।

(तभी दरबार में बैठे राजकवि चंदबरदाई सलाह देते हैं।)

सोचिए और बताइए–
क्या गौरी अपना वचन निभाएगा?
हाँ ☐ नहीं ☐

चंदबरदाई – महाराज! मैं राजकवि के साथ-साथ आपका मित्र भी हूँ। मुझे लगता है कि गौरी को क्षमा नहीं बल्कि मृत्युदंड देना चाहिए!

पृथ्वीराज चौहान – चंदबरदाई! हम आपके सुझाव का सम्मान करते हैं लेकिन अपनी गलती सुधारने के लिए हर किसी को एक मौका तो मिलना ही चाहिए। अतः मैं गौरी को क्षमादान देता हूँ।

(इस तरह क्षमादान पाकर मोहम्मद गौरी गजनी वापस लौट आता है लेकिन वह अब भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आता। वह दिल्ली के ख़ज़ाने को पाने के लिए षड्यंत्र पर षड्यंत्र रचता रहता है।)

दूसरा भाग

(पृथ्वीराज चौहान से **ईर्ष्या** करने वाले सिर्फ़ मोहम्मद गौरी जैसे विदेशी मुल्क के सुलतान ही नहीं बल्कि हिंदुस्तान के राज्यों के सम्राट भी थे। कन्नौज के राजा जयचंद पृथ्वीराज की ख्याति देखकर उनसे ईर्ष्या करते और उनका अपमान करने का **अवसर** ढूँढ़ते रहते थे।)

(यह कन्नौज के राजदरबार का दृश्य है जहाँ जयचंद सिंहासन पर विराजमान हैं।)

जयचंद – हम चाहते हैं कि हम अपनी पुत्री संयोगिता के **स्वयंवर** का आयोजन करें। उस स्वयंवर में पृथ्वीराज चौहान को छोड़कर हिंदुस्तान के सभी सम्राटों को निमंत्रण दिया जाए।

(जब संयोगिता को इस बारे में पता चलता है तो वे अपने पिता के शयनकक्ष में जाती हैं।)

संयोगिता – पिताश्री! मैं दिल्ली के शासक पृथ्वीराज चौहान को अपना वर मान चुकी हूँ। अतः उन्हें स्वयंवर में आमंत्रित करना होगा।

जयचंद – (क्रोधित होकर) असंभव! ऐसा कभी नहीं हो सकता! कभी नहीं! मैं अपने शत्रु के साथ तुम्हारा विवाह कभी स्वीकार नहीं करूँगा।

(पिता से अस्वीकृति मिलने पर संयोगिता चिंतित मुद्रा में अपने कक्ष में आती हैं तथा विचार करने के पश्चात गुप्तवश सेवक के हाथों पृथ्वीराज चौहान को प्रेम प्रस्ताव के साथ स्वयंवर में आने का निमंत्रण-पत्र भिजवाती हैं।)

Scanned with CamScanner

सेवक – (पृथ्वीराज चौहान को पत्र देते हुए) महाराज! कन्नौज की राजकुमारी संयोगिता ने यह पत्र भिजवाया है।

पृथ्वीराज चौहान – (पत्र पढ़कर) जाकर राजकुमारी संयोगिता को सूचित कर दो कि उनका यह प्रस्ताव हमें स्वीकार है।

(इधर कन्नौज के राजा जयचंद स्वयंवर के साथ पृथ्वीराज चौहान के अपमान की तैयारी में भी लगे हैं।)

जयचंद – मंत्री जी! पृथ्वीराज चौहान का एक पुतला बनवाकर स्वयंवर के द्वार पर खड़ा करा दीजिए ताकि सब पृथ्वीराज चौहान को हमारे द्वारपाल के रूप में देखें।

(यह ख़बर पृथ्वीराज चौहान के दूत को मिलती है।)

पृथ्वीराज का दूत – महाराज! सूचना मिली है कि जयचंद ने आपका पुतला बनवाकर द्वारपाल के रूप में लगवाया है।

पृथ्वीराज चौहान – (आवेश में) क्या! इतना दुस्साहस! हम इस अपमान का बदला अवश्य लेंगे।

(आज कन्नौज के राजमहल में संयोगिता का स्वयंवर है। हिंदुस्तान के कई सम्राट उपस्थित हैं। संयोगिता जयमाला लिए सभी सम्राटों को अस्वीकार कर आगे बढ़ती हैं और पृथ्वीराज चौहान की प्रतिमा को देखकर रुक जाती हैं।)

संयोगिता – (मन-ही-मन) यह प्रतिमा तो मेरे प्रिय पृथ्वीराज चौहान की है जिन्हें मैं अपने वर के रूप में स्वीकार कर चुकी हूँ।

(यह सोचते हुए संयोगिता पृथ्वीराज चौहान की प्रतिमा को जयमाला पहनाती हैं। वहाँ उपस्थित सभी सम्राट हैरानी से देखते हैं। तभी घोड़े की टापों की ध्वनि गूँजती है और पृथ्वीराज घोड़े पर सवार वहाँ उपस्थित हो जाते हैं।)

पृथ्वीराज चौहान – जयचंद! संयोगिता ने मेरी प्रतिमा को जयमाला पहनाई। अतः ये मेरी पत्नी हुईं। इस अधिकार से मैं इन्हें ले जा रहा हूँ। यदि किसी सम्राट में साहस है, तो मुझे रोक ले।

(यह कहते हुए घोड़े पर संयोगिता को सवार कर पृथ्वीराज चौहान चल पड़े, जो उनका रास्ता रोकने के लिए आगे आया, उसे मुँह की खानी पड़ी।)

Scanned with CamScanner

जयचंद – (चिंतित अवस्था में सिंहासन पर विराजमान हैं।) पृथ्वीराज चौहान ने भरी सभा में हमारा अपमान करके अच्छा नहीं किया। हम बड़ी-से-बड़ी कीमत चुकाकर भी इस अपमान का बदला अवश्य लेंगे।

सेनापति – क्षमा करें महाराज! लेकिन हम अकेले पृथ्वीराज चौहान का सामना नहीं कर सकते।

जयचंद – एक ऐसा व्यक्ति है जो हमारी सहायता कर सकता है। वह है गजनी का सुलतान मोहम्मद गौरी। मैं गौरी के साथ संधि कर पृथ्वीराज चौहान को नष्ट कर दूँगा और दिल्ली का शासक बन जाऊँगा। मंत्री जी! शीघ्र ही हमारा संधि का प्रस्ताव गौरी तक पहुँचाइए।

(संधि प्रस्ताव लेकर जयचंद का दूत गजनी के सुलतान मोहम्मद गौरी के पास जाता है।)

जयचंद का दूत – सुलतान! कन्नौज के महाराज जयचंद आपकी ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाना चाहते हैं। आप पृथ्वीराज चौहान पर आक्रमण करें। हमारी सेना आपके साथ है। सारी दौलत आपकी होगी और दिल्ली का सिंहासन महाराज जयचंद का।

मोहम्मद गौरी – (प्रसन्न होकर) सम्राट जयचंद से कहना कि उनका प्रस्ताव हमें मंजूर है। वे दिल्ली **कूच** की तैयारी करें।

(अपने शत्रु पृथ्वीराज चौहान से बदला लेने का सुनहरा अवसर पाकर गौरी फूला न समाया।)

मोहम्मद गौरी – चाहे कोई कितना ही बलवान क्यों न हो, **फूट** इनसान को कमज़ोर बना देती है। इनकी आपसी फूट ही हमारी कामयाबी का रास्ता तय करेगी। पृथ्वीराज को पराजित कर दिल्ली की सारी दौलत मेरी हो जाएगी मेरी! हाऽऽऽ

(अत्यंत विशाल सेना के साथ जयचंद और गौरी मिलकर दिल्ली पर आक्रमण कर देते हैं। उनकी विशाल सेना ऐसे लग रही थी मानो वह दिल्ली को निगल जाएगी।)

गुप्तचर – (पृथ्वीराज से) महाराज! सूचना मिली है कि कन्नौज के राजा जयचंद से संधि कर गौरी ने दिल्ली पर हमला बोल दिया है।

पृथ्वीराज चौहान – क्या! जयचंद ने गौरी से संधि कर ली! (आवेश में) हम बाहर के दुश्मन को तो एक बार माफ़ कर सकते हैं लेकिन **देशद्रोही** को नहीं। जाओ, युद्ध की तैयारी करो।

(अब पृथ्वीराज तथा गौरी के बीच एक बार फिर घमासान युद्ध होता है। लेकिन इस बार पृथ्वीराज चौहान को पराजय का सामना करना पड़ता है। मोहम्मद गौरी पृथ्वीराज चौहान को बंदी बना लेता है।)

मोहम्मद गौरी – पृथ्वीराज चौहान! जिसके नाम से लोग काँपते हैं वह आज हमारे सामने बंदी बना खड़ा है। हाऽऽऽ

जयचंद – मोहम्मद गौरी! हमने अपना वचन निभाया। अब तुम भी हमें दिल्ली का शासक बनाकर अपना वचन पूरा करो।

मोहम्मद गौरी – जयचंद, तुम्हारी सहायता के बिना तो पृथ्वीराज चौहान को हराना असंभव था। तुम्हें तो अवश्य इनाम दिया जाएगा। सैनिको! इस गद्दार जयचंद को बंदी बना लो।

Scanned with CamScanner

जयचंद – (आश्चर्य से) गौरी! ये तुम क्या कह रहे हो! तुम्हें यह विजय मेरी वज़ह से मिली है। तुम इस तरह मुझे धोखा नहीं दे सकते।

सोचिए और बताइए–
(क) गौरी से संधि किसने की?
(ख) संधि के बाद हुए युद्ध में कौन हारा?

मोहम्मद गौरी – जयचंद! मुझे यह विजय तुम्हारी आपसी फूट से मिली है, समझे। जो अपने मुल्क से गद्दारी कर सकता है, वह हमारे साथ भी गद्दारी करने से पीछे नहीं हटेगा। सैनिको! इसकी गरदन काटकर बीच चौराहे पर लटका दो और लिखकर टाँग दो– गद्दार जयचंद!

(गौरी जयचंद को चौराहे के बीचोंबीच मरवा देता है और दिल्ली की सारी दौलत हड़प लेता है।)

तीसरा भाग

मोहम्मद गौरी – दिल्ली का सम्राट पृथ्वीराज चौहान! आज हमारे सामने ज़ंजीरों में जकड़ा बंदी बनकर खड़ा है। हा ऽऽऽ.. पृथ्वीराज! मैं भी तुम्हें माफ़ कर सकता हूँ, यदि तुम मेरे गुलाम बनकर रहो।

पृथ्वीराज चौहान – (आँखें तरेरकर) मैं पृथ्वीराज चौहान हूँ। गुलाम बनकर रहने से तो अच्छा है कि मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ!

मोहम्मद गौरी – (क्रोध से) तू बंदी बना खड़ा है फिर भी हमें आँखें दिखाता है। अपनी ये घूरती निगाहों को नीचे कर!

पृथ्वीराज चौहान – क्या तुम जानते नहीं कि हम एक राजपूत हैं और एक राजपूत की आँखें मौत के बाद ही नीचे होती हैं!

मोहम्मद गौरी – सैनिको! जिन आँखों से यह हमें घूर रहा है उन आँखों को गरम सलाखों से फोड़ दो।

(आज्ञानुसार गरम सलाखों से पृथ्वीराज की आँखें फोड़ दी जाती हैं।)

मोहम्मद गौरी – हम इसे मृत्युदंड तो अवश्य देंगे लेकिन इतनी आसानी से नहीं। इसे बंदीगृह में डाल दो।

(इधर राजकवि चंदबरदाई अपने सम्राट की दुखभरी ख़बर सुनकर चिंतित होते हैं तथा अपने मित्र की जीवन-रक्षा के लिए मोहम्मद गौरी के दरबार में जाते हैं।)

चंदबरदाई – मोहम्मद गौरी! तुमने सम्राट पृथ्वीराज को बंदी बनाकर उनकी आँखें फोड़ दीं। क्या तुम भूल गए कि इसी पृथ्वीराज ने तुम्हें माफ़ी की भीख दी थी भीख!

मोहम्मद गौरी – (क्रोधित होकर) तू पृथ्वीराज की **हिमायत** करने आया है। सैनिको! इसे भी बंदी बनाकर इसके मित्र के साथ बंदीगृह में डाल दो।

(बंदीगृह में चंदबरदाई अपने मित्र की दुखद अवस्था देखकर अत्यंत दुखी होकर उनके गले से लिपट जाते हैं।)

पृथ्वीराज चौहान – मित्र! मैंने गौरी को क्षमादान देकर बहुत बड़ी गलती की। यदि अब भी मुझे एक अवसर मिल जाए तो मैं मोहम्मद गौरी का वध कर दूँ।

(और जल्दी ही एक ऐसा अवसर पृथ्वीराज चौहान को मिल जाता है।)

Scanned with CamScanner

सिपाही – (बंदीगृह के बाहर कुछ सिपाही बातें करते हुए) सुना है सुलतान तीरंदाज़ी के खेल का आयोजन कर रहे हैं जिसमें अनेक धनुर्धारी हिस्सा लेंगे।

(यह सुनते ही चंदबरदाई के दिमाग में हलचल होती है।)

चंदबरदाई – (प्रसन्न होकर) मित्र! आपने सुना। गौरी ने तीरंदाज़ी खेल का आयोजन किया है। उसमें आप भी हिस्सा लेकर शब्दबेध **धनुर्विद्या** से गौरी का वध कर सकते हैं। अब आप देखिए कि गौरी कैसे हमारे जाल में फँसता है! हमें यह अवसर गँवाना नहीं चाहिए।

चंदबरदाई – (सिपाही को बुलाकर) सिपाही! हम सुलतान से तीरंदाज़ी खेल के सिलसिले में कुछ कहना चाहते हैं। हमारा यह संदेश शीघ्र सुलतान तक पहुँचाओ।

(गौरी की **अनुमति** पाकर चंदबरदाई को दरबार में पेश किया जाता है।)

चंदबरदाई – सुलतान! आपने जो तीरंदाज़ी के खेल का आयोजन किया है उसमें मेरे मित्र पृथ्वीराज चौहान भी हिस्सा लेना चाहते हैं।

मोहम्मद गौरी – क्या! एक अंधा तीरंदाज़ी करेगा। हा ऽ ऽ ऽ

चंदबरदाई – आपने पृथ्वीराज का यह करतब देखा ही कहाँ है! आँखें न होने के बाद भी वे अच्छा निशाना लगा सकते हैं। आवाज़ सुनकर तीर चला सकते हैं।

मोहम्मद गौरी – असंभव!

चंदबरदाई – आप अवसर देकर स्वयं देख लीजिए।

मोहम्मद गौरी – ठीक है। उसकी मौत से पहले उसका यह हुनर भी देख लेंगे और यदि पृथ्वीराज चौहान का निशाना चूक गया तो उसके साथ तुम्हें भी मौत की सज़ा मिलेगी।

चंदबरदाई – मुझे मंज़ूर है।

(चंदबरदाई का पुनः बंदीगृह में प्रवेश होता है।)

चंदबरदाई – (पृथ्वीराज चौहान से) महाराज! गौरी को **परास्त** करने का आपको एक सुनहरा अवसर मिला है। इस खेल में आप तवे पर बाण न चलाकर गौरी पर निशाना साध देना।

पृथ्वीराज चौहान – लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि गौरी कहाँ बैठा है?

चंदबरदाई – दोहे के द्वारा मैं बताऊँगा कि गौरी कहाँ बैठा है और आप मेरे शब्दों के आधार पर गौरी पर तीर चला देना।

(इस तरह योजना बनाकर पृथ्वीराज के साथ चंदबरदाई तीरंदाज़ी के खेल में उपस्थित होते हैं।)

चंदबरदाई – सुलतान! तवे से निकली आवाज़ सुनकर पृथ्वीराज उस तवे पर निशाना साधेंगे। लेकिन सुलतान, आपको तीन बार **हुक्म** देना होगा तभी मेरे मित्र तीर चलाएँगे।

सोचिए और बताइए–
क्या पृथ्वीराज चौहान मोहम्मद गौरी का वध कर पाएँगे?

Scanned with CamScanner

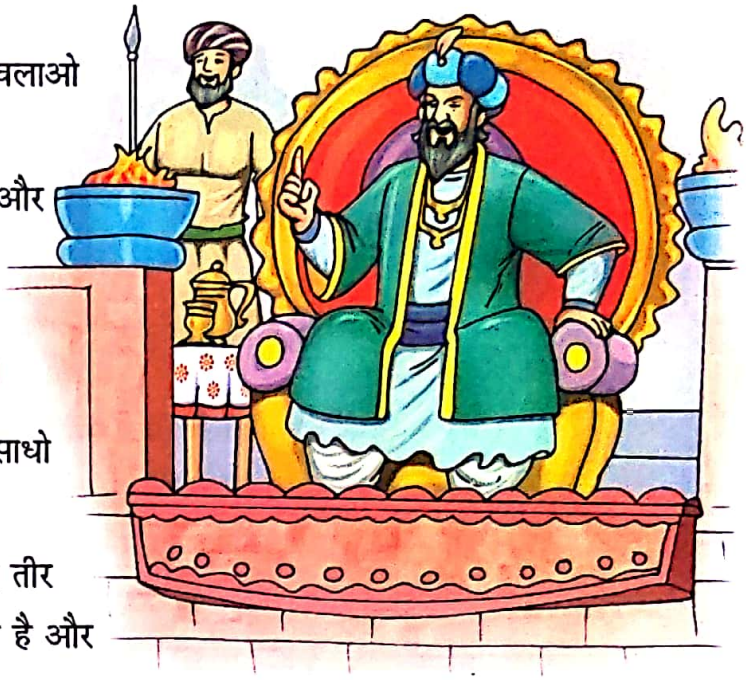

मोहम्मद गौरी – पृथ्वीराज! मैं तुमको हुक्म देता हूँ–तीर चलाओ पृथ्वीराज चौहान!

(पृथ्वीराज चौहान अपने हाथों में धनुष-बाण लेकर तैयार हैं और चंदबरदाई दोहा गान शुरू करते हैं।)

चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ठ प्रमाण।
ता ऊपर सुलतान है, मत चूके चौहान, मत चूके चौहान।।

मोहम्मद गौरी – पृथ्वीराज लगाओ निशाना! निशाना साधो पृथ्वीराज!

(गौरी की आवाज़ तथा दोहा सुनकर पृथ्वीराज तीर चला देते हैं। तीर गौरी के हृदय पर जा लगता है और उसकी मौत हो जाती है।)

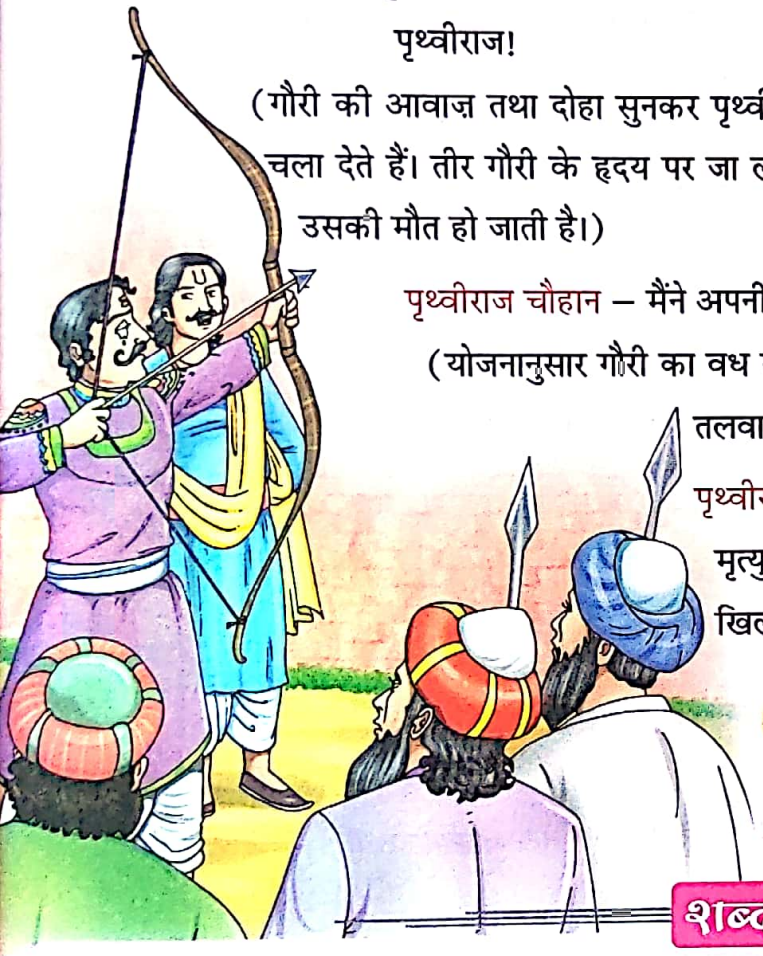

पृथ्वीराज चौहान – मैंने अपनी हार का बदला ले लिया मोहम्मद गौरी! तू फिर परास्त हो गया।

(योजनानुसार गौरी का वध करने के उपरांत चंदबरदाई तथा पृथ्वीराज एक-दूसरे के पेट में तलवार **घोंप** देते हैं।)

पृथ्वीराज चौहान– (पीड़ा से भरे स्वर में) गुलामी से अच्छा तो मृत्युलोक है। दुश्मनों के हाथों मरना पृथ्वीराज चौहान की शान के खिलाफ़ है।

मूल्य: साहस, वीरता, क्षमादान तथा आत्मसम्मान।

शब्द-अर्थ

मुल्क	–	देश	**घमासान**	–	भयानक युद्ध	**भयभीत**	–	डरा हुआ
ईर्ष्या	–	जलन	**तुच्छ**	–	जो महत्त्वहीन हो	**गुस्ताख़ी**	–	बेअदबी
विराजमान	–	उपस्थित	**निहत्था**	–	बिना हथियार के	**घोंपना**	–	गड़ाना
फूट	–	आपसी अनबन	**शब्दबेध**	–	शब्द के आधार पर बेधना	**कूच**	–	रवानगी
स्वयंवर	–	स्वयं पति का चुनाव करना	**हिमायत**	–	तरफ़दारी	**अनुमति**	–	आज्ञा
अवसर	–	मौका	**हुक्म**	–	आदेश	**परास्त**	–	हराना
धनुर्विद्या	–	धनुष चलाने की विद्या	**देशद्रोही**	–	देश के साथ गद्दारी करने वाला			

☞ वाचन/श्रुतलेख– सिंहासन, विराजमान, आक्रमण, गुस्ताख़ी, षड्यंत्र, स्वयंवर, कन्नौज, बंदीगृह, धनुर्विद्या।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

कक्षा में स्मार्ट बोर्ड पर कॉरडोवा स्मार्ट क्लास सॉफ्टवेयर के माध्यम से इस पाठ का अभ्यास-कार्य कराएँ।

पाठ से

मौखिक

सोचिए और बताइए–

(क) जयचंद को गद्दार क्यों कहा गया है?

(ख) 'मोहम्मद गौरी को आपसी फूट की वजह से विजय मिली।' क्या यह सही है? यदि हाँ, तो कैसे?

(ग) अंत में पृथ्वीराज चौहान और चंदबरदाई ने एक-दूसरे के पेट में तलवार क्यों घोंप दी?

लिखित

1. **किसने, किससे कहा? लिखिए–**

		किसने	किससे
(क)	"मैं हिंदुस्तान को कभी हानि नहीं पहुँचाऊँगा।"	.....	.....
(ख)	"तुम्हें यह विजय मेरी वजह से मिली है।"	.....	.....
(ग)	"गौरी को परास्त करने का आपको एक सुनहरा अवसर मिला है।"	.....	.....
(घ)	"लेकिन मुझे पता कैसे चलेगा कि गौरी कहाँ बैठा है?"	.....	.....

2. **अति लघु उत्तर लिखिए–**

(क) दिल्ली के शासक कौन थे?

(ख) पृथ्वीराज चौहान से ईर्ष्या कौन करता था?

(ग) संयोगिता कौन थीं? उनका विवाह किसके साथ हुआ?

3. **लघु उत्तर लिखिए–**

(क) स्वयंवर के दौरान पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिए जयचंद ने क्या कदम उठाया?

(ख) जयचंद और मोहम्मद गौरी के बीच क्या संधि हुई?

4. **दीर्घ उत्तर लिखिए–**

(क) मोहम्मद गौरी को मारने के लिए चंदबरदाई और पृथ्वीराज चौहान ने मिलकर क्या योजना बनाई?

(ख) पृथ्वीराज चौहान के साहस और वीरता का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

(ग) दोहे का अर्थ स्पष्ट कीजिए– चार बाँस चौबीस गज, अंगुल अष्ठ प्रमाण।
ता ऊपर सुलतान है, मत चूके चौहान, मत चूके चौहान।।

पाठ से आगे

आपकी सोच-समझ

☞ देशप्रेमी और देशद्रोही के स्वभाव में क्या अंतर होता है?

Scanned with CamScanner

(क) यदि आप पृथ्वीराज चौहान के स्थान पर होते तो क्या गौरी को क्षमा करते? कारण सहित उत्तर दीजिए।

(ख) शब्दबेध धनुर्विद्या का परिचय देते समय पृथ्वीराज चौहान के दिल और दिमाग में क्या-क्या विचार उठ रहे होंगे?

भाषा ज्ञान — सर्वनाम की पहचान, सर्वनाम के भेद, तत्सम-तद्भव, मुहावरे

1. मैं, यह, वह, ये, तुम आदि **सर्वनाम** शब्द हैं, जिनका प्रयोग संज्ञा के स्थान पर होता है।

दिए गए रंगीन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग किसके लिए हुआ है? लिखिए–

(क) पृथ्वीराज चौहान बोले, "मोहम्मद गौरी, तुमने ठीक सुना है।" .....

(ख) पृथ्वीराज की ख्याति देखकर राजा जयचंद उनसे ईर्ष्या करते। .....

(ग) जयचंद बोले, "गौरी! हमने अपना वचन निभाया है।" .....

(घ) गौरी! तुम्हें यह विजय मेरी वजह से मिली है। .....

(ङ) पृथ्वीराज! मैं तुमको हुक्म देता हूँ। .....

2. सर्वनाम के छह भेद होते हैं–

(i) **पुरुषवाचक सर्वनाम** – मैं, तुम, उन्हें आदि।
(ii) **निश्चयवाचक सर्वनाम** – यह, वे, ये आदि।
(iii) **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – कुछ, कोई आदि।
(iv) **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – कौन, क्या, किसको आदि।
(v) **संबंधवाचक सर्वनाम** – जो...वो, जहाँ....वहाँ आदि।
(vi) **निजवाचक सर्वनाम** – अपने-आप, स्वयं आदि।

रेखांकित सर्वनाम शब्दों के उचित भेद में ✓ निशान लगाइए–

(क)	<u>उनके</u> चेहरे पर खुशी झलक रही थी।	पुरुषवाचक सर्वनाम ☐	संबंधवाचक सर्वनाम ☐
(ख)	हमारी मदद के लिए <u>कौन</u> आएगा?	निजवाचक सर्वनाम ☐	प्रश्नवाचक सर्वनाम ☐
(ग)	<u>जो</u> सिंहासन पर बैठा है <u>वो</u> सुलतान है।	प्रश्नवाचक सर्वनाम ☐	संबंधवाचक सर्वनाम ☐
(घ)	चंदबरदाई <u>स्वयं</u> गजनी पहुँच गए।	निजवाचक सर्वनाम ☐	पुरुषवाचक सर्वनाम ☐
(ङ)	उन्होंने बंदीगृह के बाहर <u>किसी</u> की आवाज़ सुनी।	अनिश्चयवाचक सर्वनाम ☐	प्रश्नवाचक सर्वनाम ☐
(च)	<u>ये</u> ही अच्छा अवसर है।	संबंधवाचक सर्वनाम ☐	निश्चयवाचक सर्वनाम ☐

3. वे शब्द जो संस्कृत भाषा में जैसे थे, वैसे ही हिंदी भाषा में आ गए हैं, उन्हें **तत्सम शब्द** कहते हैं; जैसे– निद्रा, दुग्ध।
वे संस्कृत शब्द जो हिंदी में कुछ परिवर्तन के साथ प्रयोग में लाए जाते हैं, उन्हें **तद्भव शब्द** कहते हैं; जैसे– नींद, दूध।

दिए गए तद्भव शब्दों के तत्सम रूप छाँटकर लिखिए–

शादी – ..... माफ़ी – .....

हराना – ..... कमरा – .....

दरवाज़ा – ..... आँख – .....

कक्ष, द्वार, नेत्र, विवाह, पराजित, क्षमा

Scanned with CamScanner

4. रेखांकित वाक्यांशों के स्थान पर दिए गए मुहावरों का उचित प्रयोग करके वाक्यों को लिखिए–

बाल भी बाँका न होना | छक्के छुड़ाना | लोहे के चने चबाना | फूला न समाना

(क) पृथ्वीराज को पराजित करना **बहुत कठिन काम है।** .....

(ख) बदला लेने का सुनहरा अवसर पाकर गौरी **बहुत खुश हुआ।** .....

(ग) उन्होंने दुश्मन की सेना को **बुरी तरह हरा दिया।** .....

(घ) गौरी के आक्रमणों से उनके राज्य का **कुछ नहीं बिगड़ा।** .....

रचनात्मक अभिव्यक्ति

ये भी जानें

- पृथ्वीराज चौहान के बचपन के मित्र तथा राजकवि चंदबरदाई ने प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की थी। इसमें पृथ्वीराज चौहान के जीवन से जुड़े प्रेरक प्रसंगों को रोचक, प्रभावशाली एवं सुगठित ढंग से दर्शाया गया है।

परियोजना-निर्माण

- प्रस्तुत पाठ के संवादों को याद करके नाटक-मंचन कीजिए।
- पहले के समय में एक जगह से दूसरी जगह संदेश पहुँचाने का काम दूत या कोई नियुक्त कर्मचारी करता था और आज हम अपने संदेश को ई-मेल, एस०एम०एस० और भी कई डिजिटल माध्यमों के द्वारा तुरंत भेज देते हैं। अब आप प्रस्तुत पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़कर कुछ इसी तरह की चीज़ों या कामों के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए जिनका रूप पहले से एकदम बदल गया है।
- नाटक में प्रयुक्त उर्दू शब्दों की एक सूची बनाइए।

शोध

- भारत को सोने की चिड़िया क्यों कहा जाता था?
- दिल्ली को भारत की राजधानी के रूप में कब चुना गया?

खेल-खेल में

- **दिए गए प्रश्नों के उत्तर से वर्ग-पहेली पूरी कीजिए–**

(क) धनुर्विद्या के सर्वश्रेष्ठ गुरु जिनके शिष्य पांडव और कौरव भी थे–

(ख) सर्वश्रेष्ठ धनुर्धारी जिन्होंने तेलपात्र में मछली के प्रतिबिंब को देखते हुए मछली की आँख को बेधा था–

(ग) वह शिष्य जिसने गुरु-दक्षिणा के रूप में अपना अँगूठा काटकर अपने गुरु को भेंट दिया–

(घ) रामायण में सीता स्वयंवर के दौरान परशुराम के धनुष को किसने उठाया था?

(ङ) आज तीरंदाज़ी के खेल को किस नाम से जानते हैं?

(च) निशानेबाज़ी में भारत का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ी, जिन्होंने वर्ष 2014 के कॉमनवेल्थ गेम्स में स्वर्ण पदक जीता था–

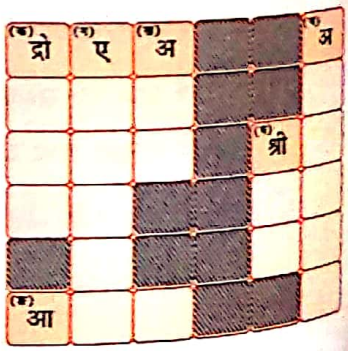

Scanned with CamScanner